व्यवस्था परिवर्तन

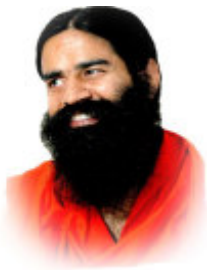

भारत स्वाभिमान

(एक सामाजिक व आध्यात्मिक आन्दोलन)

व्यवस्था परिवर्तन की आवश्यकता क्यों?

आजादी के इन ६३ वर्षों में जो समस्याएँ, चुनौतियाँ व भयावह दर्दनाक परिस्थितियाँ राष्ट्र में पैदा हुई हैं, वे इस बात का प्रमाण हैं कि हमारी नीतियाँ व व्यवस्थाएँ देशवासियों को न्याय नहीं दे पा रही हैं। अत: हमारे देश की नीतियों व पूरी व्यवस्था की नए सिरे से पुन: संरचना की नितान्त आवश्यकता है।

१. आजादी के ६३ वर्ष बाद भी यदि भारत के ५०% लोग अनपढ़ हैं, हमें अपने देश की भाषाओं में उच्च तकनीकी शिक्षा पाने का अधिकार नहीं है। गरीब व अमीर के लिए एक जैसी शिक्षा व्यवस्था नहीं है, शिक्षा में चरित्र-निर्माण के लिए संस्कार व योग शिक्षा का समावेश नहीं है। हमारे पूर्वजों के ज्ञान, जीवन व चरित्र के बारे में हमारी शिक्षा व्यवस्था में अपमानजनक बातें पढ़ाई जाती हैं – तो क्या ये सब हमारी शिक्षा व्यवस्था की असफलता नहीं है? भारत सरकार के एक अनुमान के अनुसार विद्यालयों में शिक्षा के लिये प्रवेश पाने वाले १८ करोड़ विद्यार्थियों में से मात्र १ करोड़ विद्यार्थी ही अपने उच्च-शिक्षा प्राप्ति के लक्ष्य में सफल हो पाते हैं – यह हमारी शिक्षा-व्यवस्था की सबसे बड़ी नाकामयाबी है।

२. ६५% देश के लोग बीमार होने के बाद उपचार नहीं करा सकते। उन बीमार लोगों को हम तड़फते-बिलखते मरने के लिए छोड़ देते हैं और जो ३५% लोग इलाज भी करवाते हैं उसमें ७,००,००० करोड़ (सात लाख करोड़) रुपये से ज्यादा देश के लोगों के धन का दोहन मात्र रोगों को नियन्त्रित करने मे होता जाता है और इनमें भी लगभग ५०% लोग अपनी जमीन व घर बेचकर या गिरवी रखकर इलाज करवाते हैं। यह हमारी स्वास्थ्य व्यवस्था की नाकामयाबी नहीं है तो ओर क्या है?

३. गुलामी के समय जो ३४,७३५ कानून अंग्रेजों ने हमें लूटने, शोषण करने व सदियों तक हमको गुलाम बनाने के लिए बनाए थे, उन कानूनों को हमने आजाद भारत में क्यों लागू कर रखा है? १०० अपराधियों में से मात्र ५ लोगों को ही हमारी न्याय-व्यवस्था दण्ड दे पाती है। ९५% लोगों को हमारी न्याय-व्यवस्था में न्याय ही नहीं मिल पाता है। भ्रष्टाचार करके लगभग १००,००,००० करोड़ (सौ लाख करोड़) रुपए देश का धन स्विस बैंक व अन्य विदेशी बैंको में जमा हो जाता है। १०० में से ३० हमारी बहन या बेटियों के साथ जिन्दगी ये कभी न कभी छेड़छाड़ या उन की इज्जत को तार-तार करने की कोशिश की जाती है। प्रतिवर्ष लगभग १ करोड़ बेटियों की गर्भ में ही हत्या कर दी जाती है, हरेक घंटे में ३ बहनों की दहेज के लिए हत्या व प्रति घंटा लगभग २ बेटियों के साथ बलात्कार होता है। आतंकवादी हों या खाने-पीने की वस्तुओं में जहरीली मिलावट करके ११५ करोड़ लोगों की जिन्दगी के साथ खिलवाड़ करने वाले अपराधी हों, आखिर हमारी न्याय-व्यवस्था इन भ्रष्टाचारियों, दहेज के लिए हत्या करने वालों, बलात्कारियों व अन्य अपराधियों को क्यों नहीं दण्ड दे पा रही है? इसका सीधा मतलब है कि हमारी न्याय-व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन की आवश्यकता है। देश की सम्पूर्ण व्यवस्थाओं के मूल में न्याय-व्यवस्था व अर्थ-व्यवस्था ही होती है और वर्तमान में इन दोनों व्यवस्थाओं के ठीक से न चलने के कारण ही देश में चारों ओर संघर्ष, शोषण, पक्षपात व अन्याय हो रहा है। कहीं आतंकवाद की आग, तो कहीं जाति या मजहब का उन्माद व नक्सलवाद की आग है। हमारी गलत नीतियों व गलत व्यवस्थाओं के कारण ही देशवासियों को न्याय नहीं मिल पा रहा है।

४. एक तरफ देश का सकल घरेलु उत्पाद (जी.डी.पी.) लगभग ५०,००,००० करोड़ (पचास लाख करोड) रुपए है अर्थात् देश के कारखानों, खेतों, सेवाओं के सभी क्षेत्रों एवं कुशल कारीगरों के हाथों होने वाला उत्पादन ५० लाख करोड़ रुपये का है। राज्य व केन्द्र सरकारों, स्थानीय नगरपालिकाओं व अन्य स्थानीय निकायों का प्रतिवर्ष लगभग २०,००,००० करोड़ (बीस लाख करोड़) रुपए का बजट देश के विकास के नाम पर बनता है। देश का लगभग १०० लाख करोड़ रुपए का धन स्विस बैंकों व अन्य विदेशों में जमा है। हमारी गलत आर्थिक नीतियों व गलत कर-प्रणाली के कारण से लगभग ५० लाख करोड रुपये काले धन के रूप में देश में विद्यमान है। इतनी अकूत धन-दौलत होने के बावजूद क्यों हमारे देश के लगभग ८४ करोड़ लोगों को प्रतिदिन मात्र २०-२१ रुपए में बेबसी, गरीबी, लाचारी, भूख, अभाव, अशिक्षा व दरिद्रता की जिंदगी जीनी पड़ती है। विकास के अभाव, अशिक्षा, बेरोजगारी व भूख आदि के कारण क्यों देश के लगभग २५० जिले नक्सलवाद की आग में जल रहे हैं। यदि देश के इन गरीब जिलों का ईमानदारी व संवेदनशीलता से हम विकास करते तो शायद कभी भी यहां नक्सलवाद पैदा नहीं हो पाता। आजादी के ६३ वर्षों के बाद भी हम देश को मूलभूत सुविधाएँ रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, बिजली, पानी व सड़क आदि उपलब्ध नहीं करा पाए हैं। हमारी मुद्रा व सम्पत्ति का अवमूल्यन व देश के नागरिकों की वैश्विक प्रतिष्ठा में गिरावट, हमारी अर्थव्यवस्था की विफलता दर्शाती है। संयुक्त राष्ट्र संघ की मानव विकास सूची (ह्युमन डेवल्पमेन्ट रिपोर्ट)में भारत का नाम १३४ वें स्थान पर आना क्या हमारी अर्थनीतियों के मुँह पर शर्मनाक तमाचा नहीं है? असमान व पक्षपातपूर्ण वितरण, आर्थिक भ्रष्टाचार व विदेशी अर्थनीतियों के अन्धानुकरण में अब एक क्रान्तिकारी परिवर्तन की नितान्त आवश्यकता है।

५. आजादी के ६३ वर्षों में हमने देश के अन्नदाता किसान व राष्ट्र के निर्माता मजदूर व कारीगरों का जितना अपमान किया है, उतना शायद अन्य किसी का नहीं किया। किसान के खेत को न पूरा पानी, न पूरी बिजली, न ही सही बीज उपलब्ध हैं। जहरीले व महंगे खाद व कीटनाशकों ने देश के किसानों को आत्महत्या के लिए मजबूर कर दिया है, साथ ही यह जहरीला अन्न खाकर देश के ११५ करोड़ लोगों की जिंदगी में खतरनाक रोग पैदा हो गए हैं। प्रतिवर्ष हमारी गलत कृषि-नीतियों के कारण रासायनिक खाद व जहरीले कीटनाशकों के नाम पर लगभग ५ लाख करोड़ रुपए की किसानों की आर्थिक लूट होती है और इसके परिणामस्वरूप पैदा हुई बीमारियों से लाखों लोगों की मौत व दूषित आहारजनित रोगों को नियन्त्रित करने में देश के लगभग ७ लाख करोड़ रुपए बर्बाद हो जाते हैं। किसान का बीज, कीटनाशक व इन जहरीली खादों को खरीदने में ही अपनी कुल फसल की आय का लगभग ८०% खर्च हो जाता है। इससे बड़ा प्रमाण हमारी गलत नीतियों व भ्रष्ट व्यवस्थाओं का और क्या होगा? इन सब प्रश्नों का उत्तर है– व्यवस्था परिवर्तन। बिना व्यवस्था को बदले हम भारत का भाग्योदय नहीं कर सकते। देश की समस्याओं के पूर्ण समाधान का एकमात्र मार्ग है– व्यवस्था परिवर्तन। अब थोडे-बहुत उपचार और सुधार से काम नहीं चलेगा। अब तो एक बड़े अभियान की भारत को सख्त जरूरत है, तभी भारतमाता पर लगे गहरे घाव व रोगों का हम पूरा इलाज कर पायेंगे। हमारे साथ हो रहे अन्याय, पक्षपात, हमारी गरीबी व दुर्दशा के लिए भी हमारी जाति, प्रान्त या कोई मजहब जिम्मेदार नहीं है, अपितु गलत नीतियाँ, भ्रष्ट-व्यवस्थाएँ व भ्रष्टाचार के कारण ही देश के अधिकांश लोग जिसमें सभी जाति, प्रान्त व मजहब सम्मिलित है, इन सब के साथ अन्याय हो रहा है या इंसाफ नहीं मिल रहा है।

आन्दोलन की मूल भावना

देश के ११५ करोड़ भारतीय अर्थात् भारत की सभी माँ, बहन, बेटियाँ, भाई व बुजुर्ग सभी जाति, प्रान्त व मजहबों के लोग हमारे स्वजन हैं। इन सभी देशवासियों के आरोग्य, सुख, समृद्धि, सम्मान, स्वाभिमान व आजादी के लिए कार्य करना हम अपना नैतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक व राष्ट्रीय दायित्व या कर्त्तव्य मानते हैं। भारत स्वाभिमान आन्दोलन की सभी नीतियाँ इस मूल भावना को केन्द्र में रखकर तैयार की गई हैं। इस मिशन का मुख्य व अन्तिम लक्ष्य देश व देशवासियों की नि:स्वार्थभाव से सर्वतोभावेन सभी प्रकार से हित करना व सेवा करना है।

आन्दोलन के मुख्य सिद्धान्त

भारत स्वाभिमान आन्दोलन से जुड़े सभी भाई-बहनों के वैयक्तिक, पारिवारिक, व्यावसायिक, सामाजिक व राष्ट्रीय जीवन की तीन मुख्य मर्यादाएँ या सिद्धान्त हैं– पूर्ण पवित्रता, पूर्ण भारतीयता व पूर्ण संगठित अनुशासन।

१. पूर्ण पवित्रता से तात्पर्य मुख्य रूप से वैयक्तिक व सार्वजनिक जीवन में आर्थिक व चारित्रिक शुचिता से है। इस आन्दोलन से जुड़े हुए सभी भाई-बहन या कार्यकर्त्ता इन दो पवित्रताओं को अपने जीवन में सर्वोच्च प्राथमिकता देंगे। जो कार्यकर्त्ता इन तीन मर्यादाओं या सिद्धान्तों का दृढ़तापूर्वक पालन नहीं करेंगे तो स्वत: ही इस आन्दोलन से उनका सम्बन्ध समाप्त हो जायेगा अथवा समाप्त माना जायेगा।

२. पूर्ण भारतीयता से अभिप्राय है कि इस आन्दोलन के सभी कार्यकर्त्ता अपने जीवन में स्वदेशी का पूर्ण आग्रह रखेंगे। हम शून्य तकनीकी से बनी सभी विदेशी वस्तुओं का पूर्ण बहिष्कार करेंगे। अपने वैयक्तिक, सार्वजनिक व राष्ट्रीय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हम भारत व भारतीयता को सर्वोपरि रखेंगे। स्वदेशी का सम्बन्ध मात्र वस्त्र या वस्तुओं से ही नहीं है, अपितु यह एक पूरा जीवन दर्शन है। जहाँ-जहाँ भी भारत की आत्मा, भारतीय ज्ञान-विज्ञान, कला, कारीगरी, संस्कृति, साहित्य व परम्पराएँ जुड़ी हैं, वह सब कुछ भारतीयता या स्वदेशी के सिद्धान्त से सम्बद्ध है। भारतीय भाषा, भूषा (वेशभूषा), भेषज (औषध), भोजन, भजन (संगीत) व भाव अर्थात् संस्कृति के प्रति हम सौ प्रतिशत प्रतिबद्ध रहेंगे। पहले हम भारतीय हैं, बाद में हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई व अन्य मतावलम्बी हैं। हमारे जीवन में राष्ट्रधर्म, राष्ट्रभाषा व प्रत्येक क्षेत्र में राष्ट्रहित सर्वोपरि रहेगा।

३. पूर्ण संगठित अनुशासन से अभिप्राय है– अपनी भारतीय संस्कृति के अनुसार **'संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्'** का पूर्ण संकल्पित होकर पालन करेंगे। हम पूर्ण स्वतन्त्रता व सम्पूर्ण सामर्थ्य के साथ अपने-अपने क्षेत्रों में कार्य करेंगे। हम एक साधक व सैनिक अथवा एक योगी व योद्धा की पूरी भूमिका निभाते हुए अपने स्वधर्म व राष्ट्रधर्म को पूरी ईमानदारी से निभायेंगे, साथ में ही संगठन द्वारा या मुख्यालय की ओर से निर्देशित आदेशों का भी एक सच्चे सिपाही की तरह पालन करेंगे। संगठन द्वारा आह्वान करने पर अथवा आन्दोलन करने पर सब एक साथ खड़े होकर संघर्ष करेंगे तथा सफल होंगे।

मुख्यालय द्वारा आह्वान किए जाने पर पूर्ण अनुशासन, गरिमा व ऊर्जा के साथ संगठित होकर सब मिलकर कार्य करेंगे। बिना एकता के सफलता नहीं मिलती। जब मुट्ठी भर अंग्रेज संगठित होकर पूरी दुनियाँ पर राज कर सकते हैं तो हम सब भारतीय संगठित होकर भारत को विश्व की सर्वोच्च महाशक्ति के रूप में क्यों नहीं प्रतिष्ठापित कर सकते? जब कुछ चन्द लोग संगठित होकर देश को लूट रहे हैं तो हम सब भारतीय संगठित होकर देश को लूटने से क्यों नहीं बचा सकते? हम भारत की भ्रष्ट व्यवस्था को निश्चित रूप से बदलवायेंगे व भ्रष्टाचार को मिटाकर भारत को पूर्ण संगठित अनुशासन से एक शक्तिशाली राष्ट्र बनायेंगे।

लक्ष्य

भारत स्वाभिमान आन्दोलन के मुख्य तीन लक्ष्य हैं–

१. वर्तमान में चल रही समस्त गलत नीतियों व भ्रष्ट व्यवस्थाओं का राष्ट्रहित में पूर्ण परिवर्तन कराना।
२. भ्रष्टाचार की पूर्ण समाप्ति व भ्रष्टाचार करके लूटे हुए देश के लगभग १०० लाख करोड़ रुपये को स्वदेश में लाना व उसको राष्ट्रीय सम्पत्ति घोषित करके उसको राष्ट्र के निर्माण एवं विकास में लगवाना।
3. बेरोजगारी, गरीबी, भूख, अभाव व अशिक्षा से मुक्त स्वस्थ, समृद्ध संस्कारवान् व शक्तिशाली भारत का निर्माण करना और भारत को विश्व की महाशक्ति या विश्वगुरु के रूप में प्रतिष्ठापित करना।

आत्मपरिवर्तन से व्यवस्था परिवर्तन

इस व्यवस्था परिवर्तन की शुरुआत हमें स्वयं से करनी है अर्थात् आत्म-परिवर्तन से व्यवस्था परिवर्तन के इस आन्दोलन में तन, मन, आत्मा, धन व वतन को हमें समस्त पराधीनताओं से मुक्त कराकर सम्पूर्ण स्वाधीनता के साथ जीना है। आत्म-परिवर्तन से हमारा अभिप्राय है आध्यात्मिक उन्नति एवं भारत स्वाभिमान की मुख्य पाँच नीतियों के संदर्भ में जिन कार्यों को हमें स्वयं करना है अर्थात् जिन कार्यों के करने में हम शासन अथवा सरकारों के अधीन नहीं हैं उन लक्ष्यों व उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए हमें पूरी ऊर्जा को अभी से लगा देना है तथा सरकार व शासनगत व्यवस्था-परिवर्तन के बड़े संघर्ष के लिए हमें राष्ट्र में बहुत बड़ी संगठित जनशक्ति खड़ी करनी है।

भारत स्वाभिमान आंदोलन के द्वारा वैभवशाली व शक्तिशाली भारत, विश्वगुरु भारत एवं विश्व की महाशक्ति के रूप में भारतवर्ष को प्रतिष्ठापित करने या आर्यावर्त देश को आध्यात्मिक, सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक रूप से विश्व के एक आदर्श राष्ट्र के रूप में स्थापित करने के लिए हमारी दो कार्ययोजनाएँ हैं। एक देश की आध्यात्मिक उन्नति तथा दूसरी आर्थिक उन्नति– **विद्यां च अविद्यां च ..... (यजुर्वेद)**। दोनों प्रकार की उन्नति का आधार है स्वस्थ शरीर व स्वस्थ मानसिकता। राष्ट्र का नैतिक, चारित्रिक व आध्यात्मिक विकास करने में हम पूर्ण स्वतन्त्र हैं और ये तो हमें पूर्ण पुरुषार्थ से करना ही है। इस सम्पूर्ण आंदोलन से जब देश की जनता पूरी तरह जागरूक व संगठित हो जायेगी तो व्यवस्था परिवर्तन आर्थिक समृद्धि या आर्थिक न्याय के द्वारा एक शक्तिशाली भारत बनाने का आधार तैयार हो जायेगा।

आध्यात्मिक उन्नति

वैदिक काल भारत का स्वर्णिम समय या युग था। भारत प्रत्येक क्षेत्र में विश्व का सिरमोर रहा है। सम्पूर्ण विश्व धर्म व राजनीति से लेकर शिक्षा, स्वास्थ्य, कानून, कृषि व अर्थ-व्यवस्थादि में हमारे पूर्वज राजा, महाराजाओं व ऋषि-मुनियों से मार्गदर्शन प्राप्त करता रहा व उनके नैतिक व आध्यात्मिक नेतृत्व में कार्य करता रहा। महाभारत के बाद से हमारा सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक व राजनैतिक पतन प्रारम्भ हुआ फिर भी अनेक प्रकार के विघ्नों, बाह्य आक्रमणों व आन्तरिक संघर्षों के बावजूद 18वीं शताब्दी तक भारत आर्थिक, शैक्षणिक व आध्यात्मिक दृष्टि से विश्व का एक आदर्श राष्ट्र था। यह बात स्वयं टी. बी. मैकॉले ने भी ब्रिटिश संसद में २ जनवरी १८३५ को स्वीकार की और कहा कि 'मैं भारत में पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण जगह सभी जगह घूमा लेकिन पूरे भारत में मुझे एक भी भिखारी या चोर दिखाई नहीं दिया। भारत की समृद्धि व उच्च नैतिक मूल्यों को देखते हुए मुझे नहीं लगता कि हम कभी भी भारत पर विजय प्राप्त कर सकते हैं, जब तक कि हम भारत की रीढ़ की हड्डी आध्यात्मिक व सांस्कृतिक शिक्षा व्यवस्था के स्थान पर यह स्थापित न कर लें कि विदेशी व अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था भारत की शिक्षा व्यवस्था से अधिक महान् है।

सातवीं शताब्दी से प्रारम्भ हुए विदेशी आक्रमणों व अन्त में अंग्रेजों के द्वारा देश पर किए गए अत्याचारों, जुल्मों व लूट ने इस देश को पूरी तरह तोड़कर रख दिया। अंग्रजों ने लगभग 350 से 400 लाख करोड़ रुपये की आर्थिक लूट के साथ-साथ इस देश के नैतिक व चारित्रिक मूल्यों से युक्त शिक्षा-व्यवस्था, आदर्शों एवं पूरी सामाजिक संरचना को ही ध्वस्त कर दिया। पूरे देश में जाति, प्रान्त, मजहब व भाषाओं के आधार पर फूट डाली व देशवासियों को लड़ाया। शराब पीना व वेश्यावृत्ति करना जिसको हमारे पूर्वज पाप, अधर्म, अपराध व अनैतिक मानते थे तथा मांसाहार करना भी घोर पाप समझते थे दुष्ट, क्रूर, निर्दयी इन अंग्रेजों ने 1760 में शराब की दुकानें, मांस के लिए कत्लखाने व व्यभिचार के लिए वेश्यालय खोल दिए, इस प्रकार देश को क्रूरता के साथ पूरी तरह बर्बाद किया।

अब हमारे सामने सबसे पहली चुनौती है कि हमें देश का नैतिक, चारित्रिक, सामाजिक व आध्यात्मिक उत्थान करना है। जातिप्रथा, दहेजप्रथा, बलिप्रथा व अन्य रूढ़िवादी अज्ञानमूलक भ्रान्त अन्धविश्वासों जादू-टोना, भूत-प्रेत व अन्य पाखण्डों से देश को बाहर निकालना है। शराब, तम्बाकू व अन्य नशों से देश का सर्वनाश हो रहा है, इन नशों व दुर्व्यसनों से व्यक्ति, गाँव, समाज व राष्ट्र को मुक्त करने के लिए योगाभ्यास, सत्संग, स्वाध्याय संस्कृति व संस्कारों की परम्परा को पुनः प्रतिष्ठापित करना है। सोलह-संस्कार, पञ्चमहायज्ञों व चार वर्णाश्रम धर्मों से युक्त सार्वभौमिक व वैज्ञानिक वैदिक संस्कृति को पुनः सामाजिक जीवन में समाहित करना है। गो-हत्या, कन्या-भ्रूणहत्या, दहेज-हत्या आदि पापों व जुआ आदि सामाजिक बुराईयों से इस देश को मुक्त कराना है तथा रक्तदान, नेत्रदान व वृक्षारोपण आदि पुण्यकार्यों को प्रोत्साहन देना है। गाँव से लेकर नगर व महानगरों तक हमने एक ग्यारह सूत्रीय कार्ययोजना निर्धारित की है उसके अनुसार गाँव से लेकर शहर तक इस देश का हमें नैतिक दृष्टि से उत्थान करना है।

संयम, सदाचार, सेवा व संस्कारों से युक्त तथा बीमारी व बुराईयों से मुक्त, हमें ऐसा भारत बनाना है जहाँ बड़ों का सत्कार, छोटों से प्यार, संयुक्त परिवार, सब जाति, प्रान्त व मजहब के लोगों में परस्पर प्रेम एवं सद्भावना का भाव हो। सब मिलकर पूर्ण पवित्रता से रहें सब श्रम से समृद्धि को बढ़ाएं तथा संगठित होकर पूरे राष्ट्र का हित चिन्तन करें। देश में

जो बेरोजगारी, गरीबी, भूख, अभाव, गंदगी, अनियन्त्रित जनसंख्या, अशिक्षा हिंसा, असुरक्षा व नक्सलवाद आदि राष्ट्रीय चुनौतियाँ हैं, इस सबका मूल कारण आर्थिक लूट, भ्रष्टाचार व भ्रष्ट व्यवस्थाएं हैं। हम सम्पूर्ण देशवासियों को इस सत्य से अवगत करायेंगे और देश को बचाने के लिए सभी देशवासियों को हम संगठन के माध्यम से संगठित करेंगे। जब संगठित होकर सामूहिक रूप से न्यायपूर्ण मांग पूरी मजबूती से उठेगी तो देश की लोकतान्त्रिक सत्ताओं को झुकना पड़ेगा तथा राजशक्ति-जनशक्ति के अनुसार चलने के लिए मजबूर होगी। इस प्रकार भ्रष्टाचार को मिटाकर गलत नीतियों व भ्रष्ट व्यवस्थाओं का अन्त करके हम गरीबी, भूख, अभाव व अशिक्षा आदि से मुक्त एक शक्तिशाली भारत का निर्माण करेंगे।

व्यवस्था परिवर्तन की दिशा में हमारे संगठनात्मक दायित्व

(क) शिक्षा : १- योग का क्रियात्मक, व्यवहारिक प्रशिक्षण विद्यालयों में जाकर देगें तथा बच्चों के मन में बचपन में ही अपने देश की भाषा, वेश-भूषा, भोजन, भेषज, भजन, पूजन व अभिवादन, संस्कृति एवं संस्कारों के प्रति आत्मगौरव का भाव जागृत करेंगे एवं भारत के गौरवशाली स्वर्णिम अतीत के बारे में बच्चों को बताकर उनमें स्वाभिमान का भाव भरेंगे। अपनी राष्ट्रभाषा, मातृभाषा एवं संस्कृत भाषा, स्वदेशी वेशभूषा, भोजन, भेषज, संस्कृति, संस्कारों एवं स्वदेशी चिकित्सा के प्रति देश के बच्चों में स्वाभिमान एवं आत्म-गौरव का भाव पैदा करने हेतु हम विद्यालयों, महाविद्यालयों आदि सभी शिक्षण संस्थानों में शिविरों, स्थाई कक्षाओं व व्याख्यानों के द्वारा योग एवं भारत-स्वाभिमान का अभियान निरन्तर चलायेंगे।

२- जो बच्चे गरीबी, भूख, अभाव व अज्ञानता के कारण शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। उन गरीबों के बच्चों को झुग्गी-झोपड़ियों व गाँवों में जाकर पढ़ायेंगे तथा विद्यालयों में जो शिक्षक अपने कर्तव्यों का पालन नहीं कर रहे हैं उनको अपने दायित्वों के प्रति जवाबदेह बनाने के लिए उन पर गाँव या समाज का दबाव बनायेंगे।

(ख) चिकित्सा व्यवस्था : १- नियमित योगाभ्यास से स्वयं स्वस्थ रहना तथा समाज व राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति, को स्वस्थ व संस्कारवान बनाने के लिए पूर्ण पुरुषार्थ करेंगे।

२- चिकित्सा में आपातकालीन परिस्थितियों को छोड़कर सर्दी, जुकाम, बुखार, उल्टी, दस्त, बी.पी., अस्थमा, ऑर्थराइटिस व शूगर आदि रोगों के होने पर स्वदेशी चिकित्सा का ही पूर्ण आग्रह रखेंगे।

(ग) कानून व्यवस्था : १- जब तक भारत की कानून व न्याय व्यवस्था में पूर्ण परिवर्तन नहीं हो जाता अर्थात् अपराधियों को दण्ड व ईमानदार, कर्त्तव्यनिष्ठ लोगों को शासन की ओर से पूर्ण संरक्षण व सम्मान नहीं मिल जाता तब तक हम भ्रष्टाचारी, चरित्रहीन व अपराधी किस्म के लोगों का सामाजिक बहिष्कार करेंगे अर्थात् सार्वजनिक रूप से ऐसे व्यक्तियों को हम सम्मान नहीं देगें। जहाँ-जहाँ भ्रष्टाचार है उसकी शिकायत भ्रष्टाचार विरोधी विभाग में करेंगे तथा मंत्रालयों की निष्क्रियता की स्थिति में भ्रष्टाचार की शिकायत सीधे प्रधानमंत्री-कार्यालय में करेंगे। बहुत आवश्यक होने पर मुख्यालय के निर्देश पर भ्रष्टाचार में लिप्त व्यक्ति, विभाग या मंत्रालय के विरोध में धरना शान्तिपूर्ण-प्रदर्शन या बुद्धि-शुद्धि यज्ञ का आयोजन करेंगे।

२- हम स्वयं कानून का पालन करेंगे तथा अनिवार्य मतदान के कानून के बिना भी हम स्वेच्छा से संगठन के मार्गदर्शन में राष्ट्रहित में मतदान अवश्य करेंगे

(घ) अर्थ-व्यवस्था : १- भ्रष्टाचार करके व विदेशी कम्पनियों के हाथों में देश का बाजार सौंपकर उनसे व्यापार के नाम पर लूटमार करवाकरके देश का पैसा देश से बाहर भेजा जा रहा है एवं देश गरीब और कमजोर बन रहा है। हमारी आँखों के सामने देश लुट रहा है। राष्ट्र-हित में हम 100 प्रतिशत स्वदेशी का पूर्ण आग्रह रखेंगे तथा अन्यों को भी प्रेरित करेंगे। हम शून्य तकनीकी से बनी एक भी विदेशी वस्तु का उपयोग नहीं करेंगे। हम विदेशी कम्पनियों का १०० प्रतिशत बहिष्कार करेंगे। क्योंकि देश को लूटने के सिवा किसी भी विदेशी कम्पनी ने बाढ़, भूकम्प, अकाल अथवा युद्ध जैसे राष्ट्रीय संकटों में आज तक कोई योगदान नहीं किया। हम एक भी रुपया विदेश में नहीं जाने देंगे व भ्रष्टाचार जैसे पाप से सदा दूर रहकर, पूर्ण आर्थिक व चारित्रिक शुचिता का पालन करेंगे। स्वदेशी-विदेशी कम्पनियों की पहचान के लिए पोस्टर और पत्रक छपवाकर हम समाज में जागरूकता अभियान चलायेंगे। **विदेशी कम्पनियों से होने वाली आर्थिक, चारित्रिक, शारीरिक, सामाजिक व राष्ट्रीय हानि के बारे में देशवासियों को बतायेंगे व देश को लूटने व गुलाम होने से बचायेंगे। देश की रोटी व बेटी पर हो रहे आक्रमण से देश की सुरक्षा करेंगे।**

२- हम स्वदेशी उद्योग लगाकर लगातार रोजगार के नये अवसर उपलब्ध करायेंगे तथा निर्यात को बढ़ाकर देश की अर्थ-व्यवस्था को मजबूत बनायेंगे।

(ङ) कृषि व्यवस्था : १- यदि हम किसान हैं तो हम विषमुक्त कृषि की नीति को अपनाकर स्वस्थ व समृद्ध भारत के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध रहेंगे तथा जहरीले कीटनाशक व रासायनिक खादों को छोड़कर प्राकृतिक खेती के

उपायों को हम स्वयं अपनायेंगे एवं अन्यों को भी प्रेरित करेंगे और यदि हमें विष रहित अन्न, शाक, सब्जियाँ व फलादि उपलब्ध होगें तो हम ऑर्गेनिक खाद्य पदार्थो के प्रयोग को ही सर्वोच्च प्राथमिकता देंगे। यह आत्मरक्षा अर्थात् हमारे स्वास्थ्य की रक्षा व राष्ट्ररक्षा के लिए बेहद जरूरी है।

२- हम जल संरक्षण के परम्परागत प्राकृतिक उपायों को अपनाकर जल की एक-एक बूँद को धरती के गर्भ में उतारने का पूर्ण पुरुषार्थ करेंगे।

हम संगठन के ग्रामोत्थान से राष्ट्रोत्थान के मिशन के लिए पूर्ण समर्पित रहकर कार्य करेंगे। हम सभी बीमारियों व समस्त बुराइयों से मुक्त रहकर एक स्वस्थ, समृद्ध व संस्कारवान् जीवन जीते हुए महापुरुषों व क्रान्तिवीरों के सपनों का वैभवशाली भारत बनायेंगे।

ग्राम सेवा प्रकल्प, मिशन-चलो गाँव की ओर

स्वस्थ, समृद्ध, संस्कारवान् गाँव के निर्माण हेतु योग और स्वाभिमान आंदोलन को लेकर हमारी ११ सूत्रीय कार्य योजना :

१- रोग मुक्त-स्वस्थ गाँव। २- नशा मुक्त-संस्कारवान् गाँव। ३- हिंसामुक्त-शाकाहारी गाँव। ४- भयमुक्त-सद्भावना युक्त गाँव। ५- गंदगी मुक्त-स्वच्छ गाँव। ६- अशिक्षा व अंधविश्वास से मुक्त-आदर्श गाँव। ७- अनियन्त्रित जनसंख्या से मुक्त-सुखी गाँव। ८- प्राकृतिक जल संरक्षण व संचय के उपायों से सिंचित गाँव। ९- बेरोजगारी, गरीबी, भूख और अभाव मुक्त-समृद्ध गाँव। १०- विष मुक्त कृषि व स्वदेशी नीति से स्वावलम्बी गाँव। ११- गाँव के देवस्थान या मन्दिर आदि में माह में एक बार सामूहिक सत्संग, भजन, कीर्तन, योगाभ्यास आदि से धार्मिक गाँव।

वर्ष 2010 व 2011 में गाँव से लेकर छोटे कस्बे तथा नगरों व महानगरों में प्रत्येक गली, मौहल्ला, कॉलोनी व अपार्टमेन्ट आदि में एक स्थाई योगकक्षा संचालित करके सम्पूर्ण देशवासियों को स्वस्थ बनाना है तथा योग, आयुर्वेद व स्वदेशी को लोगों की जीवन पद्धति में पूर्णरूप से समाहित करना है। योग की ये स्थाई कक्षायें ही हमारे आत्म-परिवर्तन से व्यवस्था परिवर्तन की आधारभूत मूलशक्ति होंगी। यहां से हमें आरोग्य के साथ-साथ व्यक्ति-निर्माण व राष्ट्रनिर्माण का आंदोलन खड़ा करना है। यही है आत्मनिर्माण से राष्ट्रनिर्माण, आत्मोन्नति से राष्ट्रोन्नति, आत्मजागरण से राष्ट्रजागरण एवं आत्मरक्षा से राष्ट्ररक्षा तक हमारे सम्पूर्ण आंदोलन की संक्षिप्त अवधारणा।

आर्थिक उन्नति

आर्थिक व्यवस्था परिवर्तन की मूल अवधारणा यह है कि भौतिक समृद्धि या आर्थिक विकास के बिना कोई भी राष्ट्र पूर्ण सुखी, स्वस्थ, सम्पन्न या खुशहाल नहीं हो सकता। अर्थ से ही जीवन में सार्थकता आती है तथा अर्थ के दुरुपयोग व असमान वितरण से ही सब प्रकार का अनर्थ होता है। अर्थ से ही व्यक्ति समर्थ बनता है, समर्थ व्यक्ति ही जीवन में कुछ कर सकता है। असमर्थ व्यक्ति की जिंदगी गरीबी, दु:ख, अभाव, अज्ञान, असुरक्षा, अपमान व लाचारी से भरी हुई होती है।

भारत में धन की कमी नहीं है। देश में आज भी लगभग २०० लाख करोड़ रुपये पूंजी के रूप में हैं तथा हमारे पास प्राकृतिक सम्पदा व संसाधनों की भी कोई कमी नही है। देश का लगभग ५० लाख करोड रुपये का तो सकल घरेलु उत्पाद (जी.डी.पी.) है तथा सरकार के अनुमान के अनुसार हमारी गलत आर्थिक नीतियाँ व गलत कर प्रणाली के कारण देश का लगभग ५० लाख करोड़ रुपये काले धन के रूप मे जमा है। कर के रूप में देश के विकास के लिए दिये धन में से लगभग १०० लाख करोड़ रुपये कुछ भ्रष्ट व बेईमान लोगों ने देश के बाहर स्विस बैंकों व अन्य विदेशी बैंकों में जमा करा दिया है इस प्रकार देश में लगभग २०० लाख करोड़ रुपये की अकूत धन सम्पदा तो है, परन्तु भ्रष्टाचार व गलत नीतियों के कारण इस धन पर ९९% कब्जा, एकाधिकार या नियन्त्रण मात्र १% से भी कम कुछ भ्रष्ट व बेईमान लोगों का हो गया है। और परिणामस्वरूप शेष ९९% लोगों के साथ अन्याय हो रहा है, इसी आर्थिक अन्याय, शोषण, लूट या भ्रष्टाचार के कारण ही देश के सभी वर्ग व मजहब के अधिकांश लोग गरीबी, भूख, अभाव, अन्याय, अशिक्षा, असुरक्षा व अपमान भरी जिंदगी जीने को मजबूर हैं। देश की हालत कुछ ऐसी है जैसे- एक गाँव में २०० टन अनाज था। वह पूरा अनाज गाँव के ही एक भ्रष्ट, दबंग आदमी ने लूटकर अपने घर या गोदाम में जमा कर लिया। परिणामत: गाँव में अनाज के होते हुए भी गाँव भूख से तड़फ-तड़फ कर मर रहा है। यही हालत आज हमारे देश की बनी हुई है।

देश के सभी बहुसंख्यक, अल्पसंख्यक, सभी छोटी-बड़ी जातियों, वनवासी, आदिवासी, गरीब व आम लोगों को यह समझना होगा कि इनको एक दूसरों से अर्थात् मुसलमानों को हिन्दुओं से अथवा हिन्दुओं को मुसलमानों से खतरा नहीं अपितु इन सबको बेईमान व भ्रष्ट लोगों से खतरा है। इन भ्रष्ट, बेईमान लोगों ने ही सबका हक छीनकर देश की सम्पत्ति को लूटकर विदेशी बैंकों या स्विस बैंकों में जमा किया है। इसी से समाज या देश में अलग-अलग मजहब, वर्ग या समुदाय

के लोगों में गरीबी, भूख, अशिक्षा और इसके परिणाम स्वरूप परस्पर संघर्ष पैदा हुआ है। हम सबको लगता है कि समाज के ही एक-दूसरे लोगों ने हमारे अधिकार छीन लिये हैं लेकिन सच यह है कि इन भ्रष्ट लोगों ने ही देश के लोगों को उनके मूल अधिकारों से वंचित किया है तथा देश को लूटकर देश को दरिद्र बनाया है, साथ ही सामाजिक न्याय, समता, सद्भाव व परस्पर प्रेम को खत्म करके समाज में आपस में घृणा या नफरत का भाव पैदा किया है। जिस दिन इन भ्रष्ट व बेईमान लोगों का सम्पत्ति पर से एकाधिकार समाप्त हो जायेगा व भ्रष्टाचार मिट जायेगा और देश का लगभग १५० लाख करोड़ रुपये देश के विकास में लगेगा, उस दिन देश की बेरोजगारी, गरीबी, भूख, अभाव व अशिक्षा आदि समस्त समस्याओं का अन्त स्वत: हो जायेगा और सब की समृद्धि व सबके सम्मान का रास्ता साफ हो जायेगा। इस देश की सम्पूर्ण सम्पत्ति व संसाधनों पर इस देश के सभी वर्ग मजहब व सभी समुदाय के लोगों का समान अधिकार है क्योंकि जब देश सबका है, तो देश की सम्पत्ति व संसाधनों पर भी सबका समान अधिकार है। भ्रष्टाचार की समाप्ति के बिना लोगों को उनका यह मौलिक अधिकार नहीं मिल सकता।

संक्षेप में भारत स्वाभिमान आंदोलन से हम प्रथम इस देश को आरोग्य देते हुए देश का नैतिक व चारित्रिक उत्थान करना चाहते हैं और साथ ही इस देश की समस्त भ्रष्ट व्यवस्थाओं, गलत नीतियों व भ्रष्टाचार को मिटाकर एक वैभवशाली भारत बनाना चाहते हैं और हमें पूरा विश्वास है कि सभी देशभक्त, ईमानदार व जागरूक नागरिक हमारे इस आंदोलन में हमारे साथ खड़े होंगे और हम एक दिन अवश्य विजयी होंगे तथा देश की समस्त समस्याओं का समाधान होगा।

भ्रष्टचार को खत्म करने व भ्रष्टाचार करके लूटा हुआ धन देश में लाकर सबको आर्थिक न्याय या समृद्धि दिलाने अथवा देश की गरीबी व अशिक्षा आदि को दूर करने के तीन उपाय हैं

१– इस आर्थिक भ्रष्टाचार की लूट को रोकने के लिए, भ्रष्टाचार करने वालों के लिए फाँसी की सजा या मृत्युदण्ड का कानून बनाना चाहिए। यह एक देशद्रोह है। क्योंकि भ्रष्टाचार के कारण ही देश में बेरोजगारी, गरीबी, भूख, अशिक्षा, नक्सलवाद जैसी समस्याएं पैदा हुई हैं।

२– भ्रष्टाचार करके लगभग सौ लाख करोड़ रुपये जो स्विस बैंक आदि विदेशी बैंकों में जमा है वह धन देश में आना चाहिए और उसको राष्ट्रीय सम्पत्ति घोषित करना चाहिए व इस धन को देश के सम्पूर्ण विकास में लगाना चाहिए। जब देश के विकास के लिए यह धन खर्च होगा तो देश की मूलभूत आवश्यकतायें (रोटी, कपड़ा, मकान, बिजली, पानी, सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य व सुरक्षा) पूरी होंगी तथा लोगों को रोजगार के असंख्य अवसर उपलब्ध होंगे और इससे देश की बेरोजगारी, गरीबी, भूख, अशिक्षा व नक्सलवाद जैसी समस्याओं का तत्काल समाधान हो जायेगा व भारत एक दिन में विश्व की सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति बन जायेगा। यदि आवश्यकता हो तो इनमें से ही यदि ५-१० लाख करोड़ रुपये के हथियार भी हम बना लें तो फिर दुनियाँ में हमें कोई आँख भी नहीं दिखा पायेगा।

३– देश में जमा काले धन को खत्म करके उसको उपयोग में लाना है। उसके लिए छपे हुए बड़े नोटों को चलन से बाहर (एक्सपायर) करने का एक आदेश सरकार को पारित कर देना चाहिए साथ में ही जिन लोगों के पास अभी पाँच सौ व हजार आदि के बड़े नोट हैं उनको यदि उनके पास ५ से १० लाख रुपये तक कोई भी एक राशि निर्धारित कर देनी चाहिए उतनी राशि के उनको छोटे नोट दे देने चाहिए तथा जिन लोगों के पास ५ से १० लाख रुपये से अधिक कालाधन जमा है उनको ५ से १० प्रतिशत या अन्य कोई भी न्यायसंगत एक निर्धारित टैक्स लेकर उस धन को बैंक के माध्यम से व्यापार आदि किसी भी व्यवहार में लगाने के लिए निर्देश देना चाहिए। किसी भी व्यक्ति के पास 1 लाख से अधिक रुपए कैश के रूप में नहीं होना चाहिए । हमें अपने रुपये पैसे का व्यवहार बैंकों से/क्रेडिट कार्ड या अन्य संवैधानिक तरीकों से ही करना चाहिए। साथ ही सभी प्रकार के टैक्स समाप्त करके केवल १ से २ प्रतिशत ट्रांजेक्शन टैक्स आदि लगाना चाहिए। इससे एक तरफ देश के विकास के लिए हमें लगभग 50 लाख करोड़ रुपये की पूंजी मिलेगी वहीं टैक्स में चोरी, कालाधन, भ्रष्टाचार, नकली करेंसी व आतंकवाद जैसी समस्त समस्याओं का सदा-सदा के लिए अन्त हो जायेगा और भारत दुनियाँ की सबसे बड़ी शक्ति के रूप में खड़ा हो जायेगा। देश के लोगों का धन राष्ट्र के विकास के लिए उपयोग में आयेगा। देश के विकास के लिए हमें विदेशी कम्पनियों के धन की आवश्यकता नहीं होगी बल्कि हम अपने देश के धन से ही देश के विकास की सभी योजनाएँ पूरी कर सकेंगे।

इन तीनों कामों को करने के लिए सरकार को कानून बनाने पड़ेंगे, यह काम कोई संगठन या व्यक्ति नहीं कर सकता। सरकार पर ये तीन कानून बनाने के लिए हम जनशक्ति का संगठित रूप से दबाव डालेंगे और यदि सरकार ने फिर भी राष्ट्रहित में हमारी बात नहीं सुनी तो हम व्यवस्था को बदलने के लिए सत्ताओं को बदलने से भी नहीं हिचकिचायेंगे और उन लोगों के हाथों में सत्ता सौपेंगे जो मुख्य रूप से ये तीन कानून व व्यवस्था परिवर्तन की हमारी सम्पूर्ण संकल्पना को मूर्त्तरूप देने के लिए कार्य करेंगे।

व्यवस्था परिवर्तन की रूपरेखा

राष्ट्रहित में सबकी समृद्धि, सबका सम्मान इस लक्ष्य को पाने के लिए, सम्पूर्ण आजादी के साथ देश की व्यवस्थाओं को संचालित करने के लिए देश की वर्तमान में चल रही अंग्रेजी नीतियों व कानूनों को बदलना अनिवार्य है तभी सच्चे अर्थों में स्वतन्त्रता आयेगी, आज तो स्वतन्त्र भारत में अंग्रेजी तन्त्र चल रहा है।

१. वर्तमान की अंग्रेजी नीति, कानून या व्यवस्थाओं को बदलने व राष्ट्रहित में नई स्वदेशी नीतियों व कानूनों को देश में बनवाने के लिए लोक सभा में बहुमत चाहिए तथा बहुमत के लिए लोकतन्त्र में जनमत जरूरी है। कोई कितनी ही बड़ी सामाजिक या आध्यात्मिक संस्था, महान् से महान् व्यक्ति अथवा कोई परम तपस्वी सिद्ध संन्यासी व योगी भी क्यों न हो ये सब समाज में आन्दोलन तो खड़ा कर सकते हैं, परन्तु कानून नहीं बना सकते। लोकतन्त्र में कानून बनाने का एक मात्र अधिकार निर्वाचित सरकारों के पास ही होता है।

२. जनमत के लिए जनजागरण अभियान चलाना है। योग व स्वाभिमान आन्दोलन को देश के प्रत्येक गाँव से घर तक लेकर जाना है। मिशन २०१४ के लिए सम्पूर्ण भारतवासियों को संगठित करना है। भारत स्वाभिमान सदैव एक सामाजिक व आध्यात्मिक संगठन ही रहेगा, साथ ही नि:स्वार्थ भाव से देश के लोगों की भलाई के लिए संगठन की ओर से व्यवस्था-परिवर्तन की हमारी संकल्पना को मूर्तरूप देने के लिये प्रतिबद्ध लोगों के लोकसभा चुनाव में प्रत्याशी के रूप में नाम तय करेंगे और पूरा संगठन भ्रष्ट व्यवस्थाओं को बदलने व भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए उनका समर्थन करेगा। सत्ता व सम्पत्ति के प्रलोभन से दूर रहकर भ्रष्टाचार की समाप्ति व व्यवस्था-परिवर्तन के लिये श्रेष्ठ नेतृत्व तैयार करना तथा उसे सत्ता के शीर्ष पर पहुँचाना हमारा ध्येय है। यदि अधिकांश भ्रष्ट व बेईमान लोग हमारे देश पर शासन करते हैं, तो यह करोडों देशभक्त भारतीयों के लिये घोर शर्म व अपमान की बात है।

३. सम्पूर्ण देश को संगठित करने के लिए प्रत्येक जिले में १००० से २००० विशिष्ट सदस्य तथा १०,००० से २०,००० कार्यकर्त्ता सदस्य तैयार करने हैं। वर्ष २०१० व २०११ तक प्रत्येक गाँव में कम से कम २ योग-शिक्षक तथा योग की नियमित कक्षा संचालित करनी है, साथ ही भारत स्वाभिमान की ग्राम समितियाँ गठित करनी हैं। पूरे देश में ११ लाख ५० हजार योगशिक्षक तैयार करेंगे, जो नियमित योग-कक्षाओं को संचालित करेंगे। एक योगशिक्षक १००० लोगों को निरोगी, निर्व्यसनी व संस्कारवान् बनाते हुए राष्ट्रहित में उनको संगठित करने का कार्य करेगा। २०१० में मुख्य रूप से तीन लक्ष्य निर्धारित किये गये हैं– अधिक से अधिक योगशिक्षक तैयार करना, नियमित योग की कक्षाओं की संख्या को बढ़ाना तथा अधिक से अधिक भारत स्वाभिमान के सदस्य तैयार करना।

भारत स्वाभिमान की मुख्य नीतियाँ अथवा व्यवस्था परिवर्तन का संक्षिप्त प्रारूप

भारत को अशिक्षा, बीमारी, बेरोजगारी, गरीबी, भूख, अभाव, शोषण, असुरक्षा, अन्याय और आर्थिक गुलामी से मुक्ति दिलाने के लिए व भारत की सम्पूर्ण दुर्दशा व दयनीय अवस्था को मिटाने हेतु भारत की वर्तमान मुख्य पाँच नीतियों व व्यवस्थाओं में सम्पूर्ण या आमूलचूल परिवर्तन अति आवश्यक है, जो कि इस प्रकार हैं– शिक्षा, चिकित्सा, कानून, अर्थ व कृषि सम्बन्धी नीतियाँ व व्यवस्थाएँ। शिक्षा, स्वास्थ्य व कानून आदि व्यवस्थाओं के प्रथम प्रणेता व आविष्कर्ता महर्षि पाणिनि, चरक, सुश्रुत, धन्वन्तरि व महर्षि मनु व चाणक्य आदि ऋषि-मुनि थे। पूरा विश्व हमारे पूर्वजों से प्रत्येक क्षेत्र में मार्गदर्शन प्राप्त किया करता था। अपने पूर्वजों के उन्नत जीवन, ज्ञान व चरित्र के होते हुए स्वतन्त्र भारत में विदेशी गलत नीतियों व भ्रष्ट व्यवस्थाओं का होना हमारे पूर्वजों एवं हम सभी देशवासियों के लिये घोर शर्म व अपमान की बात है।

(क) शिक्षा नीति

१. मूल्यों पर आधारित संस्कारों के साथ भारतीय भाषाओं में सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था बनानी है। विज्ञान, गणित, तकनीकी, प्रबन्धन, अभियान्त्रिकी, चिकित्सा व प्रशासकीय आदि सभी प्रकार की शिक्षा राष्ट्र भाषा व अन्य प्रादेशिक भारतीय भाषाओं में ही होनी चाहिए। इस सम्पूर्ण व्यवस्था को हम समयबद्ध तरीके से लागू करवायेंगे। ऐसा होने पर एक गरीब मजदूर व किसान का बेटा भी डॉक्टर, इन्जीनियर, वैज्ञानिक, आई.ई.एस., आई. पी.एस. व ऑफिसर इत्यादि बन सकेगा व देश के सभी लोगों को समान रूप से आगे बढने का अवसर मिल सकेगा।

२. विद्यालय, महाविद्यालय व विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा के साथ योग शिक्षा का पाठ्यक्रम भी लगाना है, जिससे देश का बचपन व यौवन सुरक्षित रहे और विद्यार्थियों का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक व चारित्रिक रूप से सर्वांगीण विकास हो ताकि इससे हम युवा व युवतियों को नशा, वासना, हिंसा व अपराध से बचाकर उनको एक आदर्श नागरिक के रूप में विकसित कर सकें।

३. हम शिक्षा के व्यापारीकरण को समाप्त करायेंगे तथा गरीब, अमीर, सभी वर्ग, जाति व मजहब के लोगों को शिक्षा का समान अधिकार दिलायेंगे, क्योंकि शिक्षा ही किसी भी राष्ट्र के विकास का मूल आधार है। अशिक्षा व अभाव ही देश की गरीबी, गन्दगी, भूख, शोषण, अन्याय, बेरोजगारी व जनसंख्या जैसी ज्वलन्त समस्या का सबसे बड़ा कारण है।

४. भारत में चल रही शिक्षा पद्धति लगभग २०० वर्ष पूर्व अंग्रेजी शासनकाल में टी.बी. मैकॉले द्वारा तैयार किए गये प्रारूप के आधार पर चल रही है। मैकॉले ने कहा था– "We must do our best to form a class who may be interpreters between us and the millions whom we govern; a class of persons Indian in blood and colour, but English in taste, in opinions, words and intellect" **(Macaulay 1835)**

अर्थात् "भारत में लागू की गई शिक्षा पद्धति से पढ़कर निकलने वाले विद्यार्थी रूप, रंग, खून व शरीर से भारतीय और विचार, आचरण, मान्यताओं व आत्मा से अंग्रेज होंगे"। मैकॉले द्वारा निर्मित भारत की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में भारतीयों के स्वाभिमान व आत्म सम्मान को नष्ट करने के लिए तथा देश के बच्चों का नैतिक व चारित्रिक पतन करने हेतु हम भारतीयों के मन-मस्तिष्क में बचपन से ही अपने पूर्वजों के ज्ञान, जीवन व चरित्र के बारे में एक षड्यन्त्र के तहत झूठी, मनघड़न्त, निराधार व अपमानजनक बातें पढ़ाई जा रही हैं, जिससे कि हम भारतीय हर बात में पश्चिम के लोगों अर्थात् अंग्रेजों, पश्चिम के विचार, दर्शन, संस्कृति को सर्वश्रेष्ठ मानकर स्वयं से व अपने पूर्वजों से घृणा करने लगे हैं। आजादी के इन ६३ वर्षों के बाद भी यह घृणित व अपमानजनक षड्यन्त्र हमारी शिक्षा व्यवस्था में एक कलंक की तरह आज तक जारी है। हम इस षड्यन्त्र को पूरी तरह समाप्त कराकर सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का भारतीयकरण या स्वदेशीकरण करायेंगे।

५. सम्पूर्ण देशवासियों को समान रूप से प्राथमिक व उच्च शिक्षा उपलब्ध कराने हेतु देश के प्रत्येक गाँव में एक उच्चस्तरीय आधुनिकतम विद्यालय तथा प्रत्येक जिलें में कम से कम एक विश्वविद्यालय बनवायेंगे। इस प्रकार देशभर में लगभग ६ लाख उच्चस्तरीय विद्यालय व कम से कम ६०० उच्चस्तरीय विश्वविद्यालय स्थापित करायेंगे। शिक्षा के साथ-साथ शरीर, प्रकृति और समाज से जुड़े अलग-अलग विषयों में अनुसन्धान के कार्य को हम सर्वोच्च प्राथमिकता देंगे। भारत की प्रतिभा, पूंजी व प्रतिष्ठा को हम संरक्षित व सम्मानित करेंगे, तभी इनका पलायन रुकेगा और एक शक्तिशाली भारत का निर्माण सम्भव होगा। भाषा के स्तर पर

हमारा सिद्धान्त स्पष्ट है– प्रथम स्थान पर राष्ट्रीय एकता, अखण्डता व स्वाभिमान के लिये राष्ट्रभाषा, दूसरे स्थान पर मातृभाषा, तीसरे स्थान पर संस्कृत-भाषा तथा चौथे स्थान पर अंग्रेजी, फ्रैंच, जर्मन, जापानी व अन्य विदेशी भाषायें होनी चाहियें।

(ख) चिकित्सा नीति या व्यवस्था

१. देश की ९० से ९९% बीमारियों का इलाज या रोगों का उपचार हम अपनी परम्परागत चिकित्सा पद्धतियों से करेंगे। शल्य चिकित्सा या आपातकालीन चिकित्सा में ही हम विदेशी चिकित्सा पद्धतियों का आश्रय लेंगे। हम एलोपैथी की जीवन रक्षक दवाओं या आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के ज्ञान व अनुसन्धान के विरोधी नहीं हैं। स्वदेशी उपचार स्थाई, सस्ता, सरल, सहज, निर्दोष, सर्वांगीण व पूर्ण वैज्ञानिक है तथा इससे देश का प्रतिवर्ष हो रहा लाखों-करोड़ों रुपयों का आर्थिक दोहन व दवाओं के खतरनाक दुष्प्रभावों से भी देश को बचाना है। अंग्रेजों के शासनकाल से ही तिरस्कार व उपेक्षा झेल रही स्वदेशी चिकित्सा विधाओं का आजाद भारत की सरकारों ने भी घोर अपमान किया है हम स्वदेशी चिकित्सा पद्धतियों को सर्वोच्च प्राथमिकता देंगे।

२. योग, आयुर्वेद, प्राकृतिक-चिकित्सा, सिद्धा व यूनानी आदि भारतीय चिकित्सा पद्धतियों पर हम वैज्ञानिक अनुसन्धान करेंगे। क्लीनिकल कण्ट्रोल, एवं ट्रायल और जैनेटिक रिसर्च आदि करने के लिए हम भारत में उच्च स्तरीय अनुसन्धान संस्थानों व आधुनिकतम चिकित्सकीय विश्वविद्यालयों का निर्माण करायेंगे। इससे हम एक तरफ देश का प्रतिवर्ष हो रहा लगभग ७ लाख करोड़ रुपयों से अधिक का दोहन रोक पायेंगे वहीं दूसरी ओर चिकित्सा से वञ्चित ६५ करोड़ से अधिक लोगो को भी आरोग्य दे पायेंगे।

३. दवा के क्षेत्र में हो रहे दुनियाँ के लगभग ५० लाख करोड़ रुपये से अधिक के व्यापार में हम भारत की सहभागिता बढ़ायेंगे और हम कम से कम १० से २० लाख करोड़ रुपये देश के लिए विदेशों से जुटा पायेंगे। बड़ा दुर्भाग्य है कि आजादी के ६३ वर्षों के बाद भी हम एक भी दवा का पेटेण्ट नहीं ले पाए। हम जड़ी-बूटियों, योग व आयुर्वेद की सम्पूर्ण चिकित्सा पद्धतियों पर अनुसन्धान को सर्वोच्च प्राथमिकता देकर पूरे विश्व के चिकित्सा जगत् में भारत की एक अति सम्मानजनक प्रतिष्ठा बनायेंगे।

(ग) कानून व्यवस्था

१. अंग्रेजों द्वारा देश को लूटने, शोषण करने व सदियों तक गुलाम बनाने के लिए बनाए गए ३४,७३५ कानूनों को तुरन्त समाप्त करके सम्पूर्ण देशवासियों को सामाजिक सुरक्षा व न्याय देने के लिए नये कानून बनवाने हैं।

२. भ्रष्टाचारी, बलात्कारी, आतंकवादी, मिलावट करने वाले तथा जहरीला प्रदूषण फैलाने वालों को मृत्युदण्ड या आजीवन कारावास जैसे कठोर दण्ड दिलवाने के लिए नये कानून बनवाने है। और इन अपराधियों को सजा मिलने में देरी न हो इसके लिए जिला या राज्य स्तर के विशेष न्यायालयों की स्थापना करवानी है। जहाँ २ से ३ महीने में सुनवाई पूर्ण करके दण्डात्मक कार्यवाही पूरी की जा सके। सज्जनों को सम्मान व संरक्षण तथा अपराधियों को दण्ड न मिलने के कारण ही देश में सामाजिक अन्याय असुरक्षा व अविश्वास पैदा होता है।

३. अनिवार्य मतदान का कानून बनवाकर सत्ता पर जनता का पूर्ण अंकुश रखेंगे और सत्ताओं को संवेदनहीन होने से बचाकर जवाबदेह बनायेंगे। अनिवार्य मतदान के कानून से राजनीति का अपराधीकरण व पतन एक ही दिन में मिट जायेगा।

४. वर्तमान में चल रहे ६४ प्रत्यक्ष व परोक्ष करों को समाप्त करवाकर एक मात्र लगभग २% ट्रांजक्शन टैक्स लगवायेंगे। इससे देश में सुख, समृद्धि व संसाधन बढ़ेंगे और देश के लोग अमीर बनेंगे। देश की मंहगाई

व गरीबी दोनों एक साथ दूर होंगी। अधिक टैक्स के कारण ही वस्तुएँ महंगी होती हैं तथा देश के आम नागरिकों की सम्पन्नता कम हो जाती है।

५. संसद में एक कानून पारित कराकर बड़े नोटों की छपाई बन्द करवानी है तथा छपे हुए बड़े नोटों को वापस लेने के व्यवस्था बनवानी है। छपे हुए नोटो के समय समाप्ति की नीति बनानी चाहिये, इससे देश में जमा काला-धन एक निश्चित समयावधि में बैंक में जमा कराना होगा, वर्ना उसकी वैधता (वैलिडिटि) समाप्त हो जायेगी। बड़े नोटों की छपाई बन्द होने पर जब छोटे नोट अर्थात् दस-बीस अथवा पचास रुपये की ही अधिकांश मुद्रा देश के बाजार में प्रचलित होगी तो इन छोटे नोटों को लाखों करोडों रुपयों की रिश्वत देने के लिए प्रयोग करना तथा रिश्वत देने के बाद इन छोटे नोटों को छिपाना असम्भव होगा। आकार में छोटी वस्तु को तो छिपाया जा सकता है, जैसे सुई व साईकिल आदि परन्तु आकार में बड़ी वस्तु हवाई-जहाज व हाथी आदि को छिपा कर रखना असम्भव है। इसी तरह छोटे नोटों की संख्या अधिक होने के कारण बड़ा आकार होने से उनको अधिक मात्रा में छिपाना असम्भव है। यदि कोई तर्क देता है कि बड़े नोट न मिलने पर लोग रिश्वत में सोना, चाँदी व हीरा आदि कीमती वस्तुओं का प्रयोग करने लगेंगे तब भ्रष्टाचार कैसे रुकेगा? इस पर हमारा स्पष्ट उत्तर है कि मुद्रा (रुपये) के बिना व्यापार, विनिमय संभव ही नहीं है, हीरा व सोना आदि खरीदने के लिए भी रुपये का ही प्रयोग करना पड़ेगा। रिश्वत हेतु छोटे नोटों को ले जाने के लिए व नकली मुद्रा को पड़ोसी देशों से भारत में घुसाने के लिए भी बड़े ट्रकों अथवा रेलगाड़ियों का प्रयोग करना पड़ेगा, जो कभी भी सम्भव नहीं हो सकेगा। अत: हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि भ्रष्टाचार, काला धन व नकली मुद्रा विशुद्ध रूप से बड़े नोटों की ही देन है। जब बड़ी मुद्रा देश के बाजार में प्रचलन में ही नहीं होगी तो ये समस्याएँ स्वत: ही समाप्त हो जायेंगी। नकली मुद्रा देश में फैलाकर ही आतंकवादी उन पैसों से हथियार खरीदकर देश में आतंकवाद फैलाते हैं। अत: बड़ी मुद्रा के न होने से आतंकवाद पर भी बहुत हद तक अंकुश लग जायेगा। तथा इससे काला धन, भ्रष्टाचार, नकली मुद्रा व आतंकवाद इन चारों समस्याओं का एक साथ अन्त हो जायेगा। यदि बडी मुद्रा के पक्ष में कोई यह तर्क देता है कि इससे मुद्रा को लाने-ले जाने (कैरी करने) में एवं लेन-देन (ट्रांजक्शन) में समस्या खड़ी होगी तो इसका उत्तर यह है कि हम अपनी बैंकिंग प्रणाली को सुदृढ़ करेंगे तथा सभी बड़े लेन देन बैंक से या कर्ज-पत्र (क्रेडिट-कार्ड) से अर्थात् प्लास्टिक मनी के माध्यम से करेंगे तो यह समस्या पैदा ही नहीं होगी।

६. लैंड एक्वीजिशन एक्ट (भूमि अधिग्रहण कानून) में पूर्ण संशोधन कराकर देश के अन्नदाता किसानों को भूमिहीन होने व आत्महत्या करने से बचायेंगे। बहुत आवश्यक होने पर ही राष्ट्रहित के कार्यों में किसानों की जमीन का अधिग्रहण होना चाहिए। उद्योगपतियों को लाभ पहुँचाने व करोड़ों की जमीन कोड़ियों के भाव व मुफ्त में बड़ी कम्पनियों को देकर भ्रष्टाचार नहीं करने देंगे।

७. गोहत्या निषेध का कानून बनवाकर भारत माता के माथे से गोमाता की हत्या का कलंक मिटायेंगे। हम देशवासियों को भी परस्पर एक दूसरे के सम्मान के लिए कुछ निर्दोष प्राणियों का माँस न खाने के लिए प्रेरित करेंगे। यदि एक बुरे जानवर सुअर का माँस न खाने से हमारे मुस्लिम भाई तथा सबके लिए उपयोगी पवित्र पशु गाय जिसको अधिकांश भारतीय देवता मानकर पूजते हैं उस गाय का माँस न खाने से यदि करोड़ों भारतीयों (हिन्दुओं, सिखों, जैन व बौद्धों आदि) को सम्मान व प्रसन्नता मिलती है तो हमारे मुसलमान भाई भी कम से कम भारत में इसका माँस न खाने का सामूहिक संकल्प लेंगे। इस काम से ही देश में बहुत अधिक राष्ट्रीय एकता का भाव बढ़ेगा और निर्दोष प्राणियों की हत्या का सिलसिला भी रुकेगा।

(घ) अर्थव्यवस्था

१. हम रुपये का अवमूल्यन रोकने के लिए ऐसी नीतियाँ बनवायेंगे जिससे रुपये को डालर व पौंड के बराबर लाया जा सके, जो लगभग १५ अगस्त १९४७ के समय में था।

२. हम स्वदेशी अर्थ-व्यवस्था को सुदृढ़ बनवाकर प्रतिवर्ष हो रहे देश के लाखों करोड़ रुपयों का दोहन बन्द करायेंगे। साथ ही हम स्वदेशी अर्थ-व्यवस्था को अपनाकर अर्थात् दूसरे देशों में निर्यात बढ़ाकर एवं आयात को घटाकर प्रतिवर्ष कम से कम २० से ३० लाख करोड़ रुपए विदेशी मुद्रा देश में लाकर देश को समृद्ध व वैभवशाली बनायेंगे।

३. हम गाँव व जिले को केन्द्र में रखकर देश की विकास योजनाएँ तैयार करायेंगे इससे प्रत्येक गाँव के हिस्से में औसतन प्रतिवर्ष ३ करोड़ रुपये व एक पाँच वर्षीय योजना में एक गाँव के विकास के लिए लगभग १५ करोड़ रुपए खर्च करायेंगे। इस प्रकार एक जिले में वर्षभर में लगभग २ हजार करोड़ रुपए तथा एक पंचवर्षीय योजना में हम एक जिले में औसतन १० हजार करोड़ रुपए विकास कार्य में खर्च करवायेंगे। यदि इस प्रकार हमारी अर्थ-व्यवस्था होगी तो देश में एक भी व्यक्ति बेरोजगार, गरीब व अभावग्रस्त नहीं होगा। पूरे देश का समान रूप से बिना पक्षपात व भेदभाव के विकास होगा तो नक्सलवाद जैसी समस्याओं का स्वत: ही अन्त हो जायेगा और देश के लगभग २५० जिले जो आज नक्सलवाद की आग में जल रहे हैं, वे भी पूर्ण खुशहाल हो जायेंगे। पूरे देश में अमन-चैन, सुख, समृद्धि व शान्ति होगी। वनवासी व आदिवासी बहुल गरीब जिलों में असमान वितरण, अशिक्षा, अभाव, बेरोजगारी, गरीबी भूख हमारी गलत नीतियों व भ्रष्ट व्यवस्थाओं को ही परिणाम है और इस भ्रष्ट व्यवस्था के परिणामस्वरूप हमारे देश के लगभग २५० जिले नक्सलवाद की आग में जल रहे हैं।

४. हम देश के बजट का २०% पैसा सरकारी व्यवस्थाओं को संचालित करने में तथा ८०% पैसा देश के विकास कार्यों अर्थात् बिजली, पानी, सड़क, रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य व सुरक्षा जैसी मूलभूत सुविधाओं को विकसित करने में खर्च करायेंगे और भारत को संयुक्त राष्ट्र संघ की मानवीय विकास मानकों की सूची (युनाईटेड नेशन की ह्यूमैन डेवल्पमैंट रिपोर्ट) में शीर्ष स्थान पर प्रतिष्ठापित करेंगे। संयुक्त राष्ट्र संघ रिपोर्ट में भारत का नाम १३४वें स्थान पर होना सभी देशवासियों के लिए शर्म की बात है। हम भारत को अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा व जापान जैसे दुनियाँ के विकसित देशों की श्रेणी में खड़ा करेंगे। हम ऐसा भारत बनायेंगे जिस भारत पर हम भारतीयों को तो गर्व होगा ही पूरी दुनियाँ भी हमें सम्मान की दृष्टि से देखेगी। यही है हमारा मूल मन्त्र- सबकी समृद्धि, सबका सम्मान। भारत की समृद्धि भारत स्वाभिमान। हम राज्यपाल, राज्य सभा व विधान परिषद् जैसे राजनैतिक ढाँचे का पुनर्गठन करायेंगे तथा केन्द्र में भी रक्षा, रेल, विदेश, वित्त व मानव संसाधन, उड्डयन, संचार, कृषि, जल संसाधन, राष्ट्रीय राजमार्ग (भूतल परिवहन) व गृहमन्त्रालय आदि मुख्य मन्त्रालयों को छोड़कर शेष सभी मन्त्रालयों की शक्ति का विकेन्द्रीकरण करके राज्यों को अधिक से अधिक शक्ति, सम्पन्नता, अधिकार व दायित्व दिलायेंगे। इसके साथ ही हम लोकसभा एवं विधानसभा के चुनावों को भी एक साथ करवाकर देश के करोड़ों रुपयों की बर्बादी को रुकवायेंगे। हम राजनीति को जबाबदेह बनाने के लिए प्रधानमन्त्री का सीधा चुनाव देशवासियों से करवाने के लिए कानून बनवायेंगे। जिससे कि लोकतन्त्र में शक्ति के सर्वोच्च केन्द्र सर्वाधिकार शक्ति सम्पन्न व्यक्ति किसी व्यक्ति विशेष का गुलाम न होकर सम्पूर्ण देशवासियों

का हित चिन्तन कर सके। विश्व में भारत के नागरिकों व हमारी मुद्रा की प्रतिष्ठा घटने के पीछे भी हमारी गलत नीतियाँ ही मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं। आज भारत की दयनीय दशा या विश्वसनीयता का स्तर यह है कि एक-दो देशों को छोड़कर दुनियाँ का छोटे से छोटा देश भी हमें बिना वीजा के अपने देश में प्रवेश की अनुमति नहीं देता। जबकि अमेरिका व ब्रिटेन के नागरिकों को दुनियाँ के एक दो देशों को छोड़कर शेष कहीं भी वीजा की आवश्यकता नहीं पड़ती।

५. प्रत्येक गाँव में एक लघु कुछ घरेलू उद्योग व प्रत्येक जिले में एक बड़ा औद्योगिक परिसर विकसित करके प्रत्येक गाँव व जिले को स्वावलम्बी व आत्मनिर्भर बनायेंगे। इस प्रकार हम देश भर में ६ लाख ३८ हजार ३६५ गाँवों में लघु एवं घरेलू उद्योगों व जिलों में लगभग ६०० से अधिक बड़े औद्योगिक परिसर तैयार करवायेंगे तथा इनकी सुरक्षा व संरक्षण के लिए विशेष कानून भी बनवायेंगे और इन्हीं उद्योगों से अतिरिक्त उत्पादन करके हम अपना निर्यात बढ़ायेंगे। हमारी इस स्वदेशी अर्थ-व्यवस्था की नीति पर चलकर भारतवर्ष दुनियाँ की आर्थिक महाशक्ति बनेगा। उदारीकरण व वैश्वीकरण की नीतियों से देश का १०० लाख करोड़ से अधिक का नुकसान हुआ है तथा देश की मुद्रा का आजादी के ६३ वर्षों में पोंड के मुकाबले ८० गुणा अवमूल्यन हुआ है तो ये ६३ वर्षों की आजादी की आर्थिक नीतियाँ हमें ८० साल पीछे लेकर गई है, तो फिर इसी को आजादी कहते हैं तो फिर गुलामी किसे कहेंगे? आजादी के इन ६३ वर्षों में लगता है चेहरे बदले हैं चरित्र, नीतियाँ व व्यवस्थाएँ नहीं बदली, इसीलिए पहले विदेशी लूटते थे अब अपने ही देश के लोगों के हाथ देश लुट रहा है और हम मौन होकर देश को लुटवा रहे हैं। अब उठो, जागो और देश की सम्पूर्ण व्यवस्थाओं को बदलने के लिए भारत स्वाभिमान के आन्दोलन के साथ पूर्णरूपेण संगठित होकर खड़े हो जाओ। अब देश की हालत इतनी खराब हो चुकी है कि छोटे-छोटे सुधार या संशोधन से काम नहीं चलेगा अब तो जब तक पूरी व्यवस्था (सिस्टम) नहीं बदलेगा तब तक बात नहीं बनेगी व देश की दुर्दशा नहीं मिटेगी। अतः आओ हम सब मिलकर एक नया इतिहास बनायें और भारत को विश्व की सर्वोच्च महाशक्ति बनाएँ। अंग्रेज व अंग्रेजी तन्त्र की गुलाम इन राजनैतिक पार्टियों ने इस देश की बहुत तबाही की है अब तो इनसे तौबा करो और एक नया इतिहास रचो। राजनैतिक पार्टियों के पास देश के समग्र सर्वांगीण विकास की न तो नीतियाँ हैं और न ही उनकी नीयत ही ठीक है। कोई चेहरे दिखाकर वोट माँगता नजर आता है, तो कोई जाति व मजहब की आग लगाकर देश को जलाता हुआ देश को तोड़ने का षड्यन्त्र करता दिखता है। देश का विकास चेहरों से नहीं, चरित्र से होता है।

(ङ) कृषि व्यवस्था

१. हम देश के प्रत्येक किसान के खेत को पानी, बिजली, उन्नत बीज, प्राकृतिक कीटनाशक व हानिरहित उच्च कोटि की उत्पादकता बढ़ाने वाला खाद उपलब्ध करायेंगे तथा इसके लिए गाँव के गोधन व पशुधन की रक्षा करनी होगी। इससे देश का अन्नदाता किसान व स्वदेशी अर्थ-व्यवस्था से देश का निर्माता, कारीगर व मजदूर खुशहाल, सुखी व समृद्ध बनेगा। आजादी के इन ६३ वर्षों में सबसे अधिक अपमान, बेबसी, लाचारी व दरिद्रता का शिकार हमारी गलत नीतियों एवं कानून के कारण देश का किसान, गरीब, मजदूर व कारीगर ही हुआ है। स्वदेशी अर्थ-व्यवस्था व स्वदेशी कृषि व्यवस्था से हम इनको सुख, समृद्धि व स्वाभिमान के साथ जीने का हक दिलायेंगे। जहरीली खेती व प्रदूषण के कारण करोड़ों लोग कैंसर, टी0बी0, गठिया, हृदय रोग, मधुमेह, मोटापा व उच्च रक्त चाप व अस्थमा जैसे घातक रोगों के शिकार हो गए हैं। हम विषमुक्त कृषि से सम्पूर्ण देशवासियों को आरोग्य देंगे और महामारियों की तरह बढ़ रही बीमारियों की सभी प्रकार से रोकथाम करेंगे।

२. हम परम्परागत उपायों से जल प्रबन्धन की दिशा में कार्य करेंगे और एक स्वस्थ, निर्दोष प्रभाव व वैज्ञानिक जल प्रबन्धन नीति का निर्माण करायेंगे। हम मुख्य रूप से वर्षा जल को संरक्षित करेंगे तथा पानी की एक-एक बूँन्द को धरती माता के उदर में उतारेंगे जिससे कि भूमि में जल स्तर बढ़े जो की ९० से ९९% वर्षा जल समुद्र में ही बह जाता है। कहीं बाढ़ तो कहीं सूखे से पूरे देश में संकट पैदा होता रहता है, हम इस बाढ़ व सूखे की समस्या का स्थाई समाधान निकालेंगे। यदि वक्त रहते हमने प्रभावी जल नीति नहीं बनाई तो जल के लिए देश में युद्ध जैसे हालात हो जायेंगे और यदि हमने जल प्रबन्धन की नीति पर ठीक से काम किया तो हम देश को खाद्यान्नों, दालों व खाद्य तैलों व दुग्धादि में आत्मनिर्भर बनायेंगे ही साथ में ही दुनियाँ के अन्य देशों की भी खाद्य आवश्यकताओं की पूर्ति कर पायेंगे और देश का निर्यात बढ़ाकर देश को आर्थिक दृष्टि से मजबूत बना सकेंगे।

३. हम कृषि के औद्योगीकरण खाद्य प्रसंस्करण व फसलों के मूल्यांकन की एक स्वस्थ व नई नीति बनवायेंगे। जिससे खेती घाटे का सौदा न रहे। गाँवों से पलायन रुके साथ ही किसान आत्महत्या के लिए मजबूर न हो।

देश की दुर्दशा व गलत नीतियों के लिए जिम्मेदार कौन?

१– राजनेता २– ईमानदार लोगों की राजनीति से घृणा ३– प्रतिष्ठित व स्थापित लोगों में साहस का अभाव

१. आत्मग्लानि, हीनभावना, छोटी व खोटी सोच के कारण यह विचार हमारे अधिकांश राजनेताओं का रहा है कि अंग्रेजों से अच्छी शिक्षा व्यवस्था, स्वास्थ्य व्यवस्था, कानून व्यवस्था, अर्थ-व्यवस्था व कृषि व्यवस्था आदि हम नहीं बना सकते। यही मुख्य कारण रहा कि हम आजादी के ६३ वर्षों के बाद भी स्वतन्त्र भारत में अंग्रेजी तन्त्र को ही ढ़ो रहे हैं अर्थात् जो नीतियाँ हमें गुलाम बनाने व लूटने के लिए अंग्रेजों ने बनाई थी, ट्रांसफर ऑफ पावर एग्रीमेण्ट के तहत आजादी के बाद उन्हीं अंग्रेजी नीतियों के आधार पर देश की व्यवस्था चला रहे हैं। यह हमारे देश की अव्यवस्था, दुर्दशा, गरीबी, बेरोजगारी, भूख, अभाव व अशिक्षा आदि का मुख्य कारण है और शहीदों के खून से मिली आजादी का अपमान है। लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली में किसी भी देश की समृद्धि या दरिद्रता या दुर्दशा के लिए वहाँ की सरकारों की नीतियाँ और कानून ही मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं, क्योंकि पूरा देश सरकार द्वारा निर्धारित नीतियों व कानूनों के अनुसार चलने के लिए बाध्य होता है। यदि हमारी नीतियाँ और कानून अच्छे होते तो देश की यह दुर्दशा कभी नहीं होती। यदि देश में हिंसा, अपराध, भ्रष्टाचार, बलात्कार, सामाजिक शोषण, अन्याय, अशिक्षा, अभाव, आर्थिक असंन्तुलन व संघर्ष बढता है तो इसके लिये भी हमारी गलत नीतियाँ ही मुख्य रूप से जवाबदेह हैं क्योंकि आखिर इन विषमताओं के लिये जिम्मेदार व्यक्तियों को हमने दण्डित क्यों नहीं किया। उच्च चरित्र व दृढ़ इच्छाशक्ति के अभाव के कारण ही बने हुए अच्छे कानून भी देश में क्रियान्वित नहीं हो पाते।

२. आजादी के इन ६३ वर्षों में देश की सरकारों की गलत नीतियों, भ्रष्ट-व्यवस्थाओं, भ्रष्टाचार व लूट-खसोट को देखकर देशभक्त, सच्चे-अच्छे, ईमानदार व कर्त्तव्यनिष्ठ लोगों के मन में सरकार चलाने व नीतियाँ बनाने के लिए जिम्मेदार व भ्रष्टाचार करके देश को लूटने वाले इन अधिकांश नेताओं व राजनीति से घृणा पैदा हो गई है। अच्छे, सच्चे व ईमानदार लोग राजनीति की उपेक्षा व निन्दा करने लगे हैं, इसके चलते अधिकांशतः भ्रष्ट व बेईमान नेताओं के होसले और अधिक बुलन्द हो गए है और वे अब लगभग पूरी तरह निरंकुश होकर देश को लूटते हैं तथा देश की नीतियों के बदलने के बारे में न उनके पास समय है न नीयत, न दृष्टिकोण और न ही इसकी चिन्ता तथा अधिकांश राजनेताओं के पास न तो वैसी योग्यता है कि वे देश के बारे में अच्छा सोच सकें व सही नीतियाँ बनाएँ।

३. राजनीति से लेकर जीवन व दुनियाँ के प्रत्येक क्षेत्र में विश्वास बहुत बड़ा काम करता है। पहले तो किसी एक व्यक्ति के प्रति सम्पूर्ण देशवासियों का विश्वास या भरोसा पैदा होना बहुत ही कठिन बात है और यदि

किसी एक व्यक्ति के प्रति देश के करोड़ों लोगों का भरोसा पैदा हो भी जाए तो उस प्रतिष्ठापित व्यक्ति के मन में यह भाव, साहस व हिम्मत पैदा होना कि वह यह चुनौती स्वीकार करे कि मुझे इस भ्रष्ट व्यवस्था व गलत नीतियों को बदलवाना है, यह काम इसलिए और भी अधिक कठिन है, क्योंकि भ्रष्टाचार करके व देश को बेरहमी, बेदर्दी से लूट करके ये बेईमान व भ्रष्ट लोग आर्थिक दृष्टि से बहुत शक्तिशाली बन गए हैं। एक प्रतिष्ठापित व्यक्ति यह जोखिम मौल लेने को तैयार नहीं होता कि वह इन भ्रष्ट व शक्तिशाली लोगों से सीधा संघर्ष मोल ले या उनको चुनौती दे और प्रतिष्ठा दांव पर लगाए। मुझे तो मुख्यरूप से ये ३ कारण लग रहे हैं जिससे आजादी के ६३ वर्षों के बाद भी देश की दुर्दशा, गरीबी, भूख, अशिक्षा व अभाव आदि दिन-प्रतिदिन बढ़ ही रहे हैं। मात्र कुछ चन्द लोग हैं जो खुद के दम पर सरकार द्वारा प्रताड़ित करने, सताने, लूटने, रिश्वत लेने, दबाने व कुचलने के बाद भी आगे बढ़ रहे हैं। उन्हीं के कारण इस देश में यह कुछ विकास, रोशनी, आशा व विश्वास नजर आता है। अन्यथा भ्रष्ट लोगों ने देश को बर्बाद करने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी है।

प्रत्येक राजनैतिक दल में देशभक्त ईमानदार व चरित्रवान् लोग भी हैं, उनका हम हृदय से सम्मान करते हैं और आह्वान करते हैं कि भ्रष्टाचार की समाप्ति एवं व्यवस्था परिवर्तन के इस आन्दोलन में सहयोग करने के लिए पहल करें। राजनैतिक दल व दलों में सम्मिलित देशभक्त व ईमानदार लोगों के अलावा हम देश के सभी सामाजिक, आध्यात्मिक व धार्मिक संगठनों व उनसे जुडे जागरूक लोगों से भी आह्वान करते हैं कि आओ! हम सब राष्ट्र निर्माण के इस यज्ञ में संगच्छध्वम् संवदध्वम् .... के अनुसार एक साथ मिलकर आगे बढ़े और भ्रष्टाचारमुक्त एक वैभवशाली भारत बनायें। अकेले-२ संघर्ष करने से विजय नहीं मिलेगी, सबको मिलकर संघर्ष करना है।

मैंने यह अभियान क्यों शुरु किया?

मैंने अपनी सम्पूर्ण प्रतिष्ठा दाँव पर लगाकर लोग या जमाना क्या कहेगा इसकी बिना परवाह किए, इन अधिकांश भ्रष्ट, बेईमान व ताकतवर लोगों को चुनौती दी है और इन भ्रष्ट राजनैतिक व्यवस्थाओं व नीतियों को बदलने का एक तरफा दृढ़ संकल्प किया है। सच बात तो यह है कि हमारा यह अभियान किसी के खिलाफ बगावत नहीं है और न ही कोई विद्रोह या बखेड़ा। मैंने देश के प्रति अपना कर्त्तव्य, धर्म, जिम्मेदारी या राष्ट्रधर्म मानकर इस आन्दोलन को प्रारम्भ किया है। हमारा उद्देश्य देश की नीतियों एवं कानूनों को अच्छा बनवाकर गरीब, भूख, अभाव, बेरोजगारी, अशिक्षा व भ्रष्टाचार से मुक्त शक्तिशाली भारत बनाना है। लेकिन मुझे पूरी आशंका है कि सरकारें चलाने वाले व देश की नीतियाँ बनाने के लिए जिम्मेदार अधिकांश भ्रष्ट व बेईमान नेता इस आन्दोलन को अपने खिलाफ ही मानेंगे। लेकिन फिर भी मैं मानता हूँ कि देशभक्त व ईमानदार नेता व देश के करोड़ों लोग हमारे साथ खड़े होंगे और अन्ततः देवत्व विजयी होगा व असुरत्व पराजित होगा। असत्य, अधर्म, पाप व अन्याय हमेशा से पराजित होता आया है तथा आगे भी पराजित ही होगा। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्री राम, योगेश्वर श्री कृष्ण, महर्षि वशिष्ठ, महर्षि विश्वामित्र व महर्षि चाणक्य से लेकर महर्षि दयानन्द आदि हमारे सभी पूर्वजों ने सदैव पाप, अन्याय, अधर्म व असत्य का प्रखर विरोध किया है। अन्याय व पाप के विरोध व विनाश के अतिरिक्त हमारे सभी महापुरुषों ने और किया ही क्या है?

एक सामूहिक भय या डर

भारत स्वाभिमान का लक्ष्य, उद्देश्य व नीतियों आदि के बारे में सब कुछ सुनकर लोग कहते हैं बाबा आप कर तो सब कुछ ठीक रहे हैं, हम सब भारतीय भी यही चाहते हैं कि यह स्वाभिमान का काम तो होना ही चाहिए तो फिर मैं पूछता हूँ कि तुम डरते क्यों हो?

१. बाबा ये भ्रष्ट व बेईमान लोग आपके जीवन को कहीं खतरा पैदा न कर दें ? हम आपको खोना नहीं चाहते।

२. ये लोग बहुत ताकतवर हैं, इनके पास अकूत धन सम्पत्ति है; ये लोग बाहुबली हैं, ये बड़े पापी व निर्दयी हैं, ये कुछ भी कर सकते हैं?

३. ये बेईमान लोग आपके खिलाफ चरित्रहनन का कोई भी खतरनाक षड्यन्त्र रच सकते हैं और आप पर झूठे आरोप लगाकर अथवा कानूनी दाव-पेचों में फँसाकर आपको बदनाम करने का घृणित प्रयास कर सकते हैं। सरकारों के पास बहुत ताकत होती है, उसका दुरुपयोग करके आपको बदनाम करने, कुचलने या दबाने का कोई भी असफल घृणित प्रयास कर सकते हैं अथवा झूठे मुकद्दमों द्वारा खतरनाक धाराओं में फँसाकर आपकी प्रतिष्ठा पर प्रहार कर सकते हैं।

उत्तर

१. पापी लोगों के तन, मन, विचार व जीवन, पाप से इतने कमजोर हो जाते हैं कि वे शक्ति व सम्पत्ति युक्त होते हुए भी शक्तिहीन रहते हैं और वे खुद ही अपने पाप से मरे हुए होते हैं, कभी भी किसी पुण्यात्मा को नहीं मार सकते। उदाहरण के लिए रावण, कंस, दुर्योधन व शिशुपाल आदि भगवान् श्री राम व योगेश्वर श्रीकृष्णादि का कुछ भी नहीं बिगाड़ पाए, जबकि शक्ति, सम्पत्ति व संख्या में रावण व कंस आदि अधिक शक्तिशाली थे। आप कहेंगे वे तो महापुरुष या भगवान् थे आप तो एक अदने से संन्यासी या इंसान हो, तो मैं आपसे कहूँगा मैं भगवान् नहीं हूँ लेकिन मुझे भगवान् ने इसी कार्य के लिए उत्पन्न किया है, मैं ईश्वर का अमृत पुत्र हूँ। मैं इन पापियों से नहीं मरूँगा और यदि इतने से भी तुम सन्तुष्ट नहीं हो पाते हो तो अन्त में आप सबकी शक्ति, सम्पत्ति व देश के ११५ करोड़ लोगों की संख्या जब मेरे साथ है तो शक्ति, सम्पत्ति व संख्या में भी इनसे हम कम नहीं, अपितु अधिक ही हैं, ये पापी मेरे जीवन का अन्त नहीं कर पायेंगे, अपितु ऐसा सोचने वालों का अपने पाप से स्वतः ही अन्त हो जायेगा। यदि कोई मेरे इस भौतिक शरीर का अन्त भी कर दे, तो भी राष्ट्रहित में जो मैंने विचार क्रान्ति पैदा की है, उसे दुनिया की कोई ताकत मिटा नहीं सकती।

हमारा संकल्प

- मैं सत्ता व सम्पत्ति के प्रलोभन से दूर रहकर भारत स्वाभिमान की नीतियों के अनुरूप शक्तिशाली भारत बनाने के लिए अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा लगाऊँगा तथा इसके लिए मैं आत्मबलिदान (कुर्बानी, शहादत) के लिये भी तैयार रहूँगा।
- मैं स्वदेशी का पूर्ण आग्रह रखूँगा तथा शून्य तकनीकी से बनी किसी भी विदेशी वस्तु का प्रयोग नहीं करूँगा।
- मैं स्वयं भ्रष्टाचार से दूर रहूँगा तथा देश से भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए पूर्ण संघर्ष करूँगा।
- मैं किसान, मजदूर, गरीब व अमीर सब को समान रूप से शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय, समृद्धि एवं सम्मान दिलाने के लिए संकल्पित रहूँगा तथा नियमित योगाभ्यास करते हुए स्वयं स्वस्थ रहूँगा एवं स्वस्थ समाज व राष्ट्र का निर्माण करूँगा।
- मैं भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, गन्दगी, गरीबी, भूख, अभाव व अशिक्षा आदि से मुक्त वैभवशाली भारत बनाने के लिए चुनाव के समय राष्ट्रहित में मतदान अवश्य करूँगा तथा दूसरों को भी मतदान के लिए प्रेरित करूँगा।

वैदिक शौर्य मन्त्र

- **उत्तिष्ठत सं नह्यध्वमुदाराः केतुभिः सह।**
  सर्पा इतरजना रक्षांस्यमित्राननु धावत॥ –अथर्व० ११।१०।१

उठो वीरो, कमर कस लो, झण्डे धर्म ध्वज या राष्ट्रध्वज हाथों में पकड़ लो। जो भुजङ्ग हैं, लम्पट हैं, देशद्रोही, राक्षस हैं, शत्रु हैं, उनको परास्त करके देवत्व-विजय व असुरत्व की पराजय करो।

- **अहं स यो नववास्त्वं बृहद्रथं स वृत्रेव दासं वृत्रहाऽरुजम्।**
  यद् वर्धयन्त प्रथयन्तमानुषग्दूरे पारे रजसो रोचनाऽकरम्॥ –ऋग्० १०।४९।६

सुनो, मैं वह हूँ जिसने गरीबों का खून चूस-चूस कर, भ्रष्टाचार करके देश को लूटकर नयी-नयी हवेलियाँ या महल खड़ीं कर लेने वाले, बड़े-बड़े रथ-बग्घियों या गाड़ियों पर सैर सपाटे करने वाले दस्युओं, भ्रष्टाचारियों व अपराधियों को बात की बात में धूल में मिला छोड़ा है। अत्याचार के बल पर फूलने-फलने वाले दुष्टचोरों को मैंने टाँग पकड़ कर ऐसा उछाला है कि वे आकाश के भी परले पार जाकर गिरे हैं।

❖ **कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः।** —अथर्व० ७।५०।८

मैं हाथ पर हाथ धर कर बैठने वाला नहीं हूँ। मेरे दाहिने हाथ में कर्म है और बाएँ हाथ में विजय रखी है।

❖ **एक एवाऽग्निर्बहुधा समिद्धः, एकः सूर्यो विश्वमनु प्रभूतः।**
एकैवोषाः सर्वमिदं वि भात्येकं वा इदं वि बभूव सर्वम्॥ —ऋग्० ८।५८।२

'अकेली आग कितनी चमक से चमकती है! अकेला सूर्य विश्व को प्रकाशित करता है। अकेली उषा सब दृश्यमान वस्तुओं को चमका रही है। अकेला परमेश्वर सर्वत्र व्यापा हुआ है।'

❖ **बाहू मे बलमिन्द्रिय॰हस्तौ मे कर्म वीर्यम्। आत्मा क्षत्रमुरो मम॥** —यजुः० २० । ७

मेरी भुजाओं में इन्द्र का-सा बल है, हाथों में कर्म और समार्थ्य है। मेरा आत्मा दुःखियों का कष्ट दूर करने वाला है, मेरी छाती स्वयं चोटें खाकर दूसरों को बचाने वाली है।

❖ **अहमिन्द्रो न परा जिग्य इद् धनं न मृत्यवेऽव तस्थे कदा चन। —ऋग्० १०।४८।५**

सुनो मेरा परिचय, मैं इन्द्र हूँ, बाँका वीर हूँ, धन दौलत का प्रलोभन व मृत्यु मुझे परास्त नहीं कर सकते।

❖ **इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। अपघ्नन्तो अराव्णः॥** —ऋग्० ९।६३।५

हे कर्मशील जनों! शौर्य-ऐश्वर्य को बढाओ, स्वयं को पूर्ण रूप से श्रेष्ठ बनाओ और असुरत्व का संहार करो।

❖ **अग्निरस्मि जन्मना जातवेदा घृतं मे चक्षुरमृतं म आसन्।**
अर्कस्त्रिधातू रजसो विमानोऽजस्रो घर्मो हविरस्मि नाम॥ —यजुः० १८। ६६

'मैं अग्नि हूँ, दहकता देदीप्यमान हुआ अङ्गारा हूँ, स्वभाव से ही जागरूक हूँ। मेरी आँख में तेज है, मेरे मुख में अमृत है। मैं सूर्य हूँ, शरीर, मन व आत्मा के तीन तेजों से युक्त हूँ, सारे भूमण्डल को अपने कदमों से माप लेने वाला हूँ, अक्षय हूँ, जलता हुआ यज्ञकुण्ड हूँ व आहुति हूँ।

❖ **यद्वदामि मधुमत्तद्वदामि यदीक्षे तद्वनन्ति मा।**
त्विषीमानस्मि जूतिमान् अवान्यान् हन्मि दोधतः॥ —अथर्व० १२।१।५८

जिससे बात करता हूँ, मीठा बोलता हूँ; जिसकी ओर दृष्टि करता हूँ, वह मुझसे स्नेह करने लगता है। एक ओर तो मेरा यह मधुर रूप है; किन्तु साथ ही ऐसा तेजस्वी और वेगवान् भी हूँ कि जो दुष्ट मुझे अपना क्रोध दिखाते हैं, उन असुरों का मैं तत्काल अन्त कर देता हूँ।

वेदों के ये मन्त्र हमारे हृदय में शौर्य, उत्साह, पराक्रम व आत्मविश्वास का भाव जाग्रत करने वाले हैं। भ्रष्टाचारी, असुर व नरपिशाचों को अपने-आप दण्ड देना तो कानून के अनुसार अपराध है, परन्तु इन अपराधियों को मृत्युदण्ड का कानून बनवाने के लिये हम संगठित होकर संघर्ष करेंगे।

सद्विचार प्रवाह

❖ योग एवं यज्ञ जीवन के दो पुण्य प्रवाह हैं, दो पंख हैं, जो हमारे जीवन को निरन्तर उत्कर्ष की ओर ले जाते हैं तथा भोग जीवन का अपुण्य प्रवाह है, जो मनुष्य को निरन्तर पाप एवं पतन की ओर ले जाता है।

❖ **संश्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन विराधिषि। मयि एव अस्तु मयि श्रुतम्॥** (अथर्ववेद)
हम वेदोक्त पथ पर ही सदा आगे बढ़ें। मेरा श्रुतज्ञान मुझमें स्थिर रहे।

❖ गुरु दर्शन या गुरुभक्ति का अर्थ है— गुरु के चरित्र को आत्मसात् करना तथा दक्षिणा का उद्देश्य है— गुरु द्वारा संचालित सेवा-यज्ञ में सहयोग करना।

❖ **निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु, लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।**
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा, न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥
प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः, प्रारभ्य विघ्नविहिता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः, प्रारभ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति॥

अर्थात् जग चाहे निन्दा करे या स्तुति, लक्ष्मी (धन) आये या जाए आज मृत्यु हो जावे या युगों के बाद, परन्तु सत्य व धर्म के पथ से मैं विचलित नहीं होऊँगा। कुछ लोग विघ्न-बाधाओं से भयभीत होकर किसी पुण्य कार्य को प्रारम्भ ही नहीं करते,

कुछ प्रारम्भ करके बीच में ही भयभीत होकर रुक जाते हैं, उत्तम कोटि के लोग वे हैं जो विघ्न, बाधाओं, भयंकर संकटों व प्रतिकूलताओं में भी नहीं रुकते और वे अन्त में विजयी होकर ही विराम लेते हैं।

- जीवन एक खेत की तरह है एवं विचार उसमें एक बीज की तरह है। जैसे हमारे विचार होंगे, वैसा ही हमारा व्यक्तित्व, व्यवहार, स्वभाव व आचरण होगा।
- देश एवं देशवासियों की सेवा का सबसे श्रेष्ठतम माध्यम योग है।
- जीवन भगवान् की कृपा का प्रसाद व मृत्यु उसके घर का आमन्त्रण है। न भोगो – न भागो – बस जागो, ज्ञान ही समाधान है।
- यह विचार अपने हृदय में अखण्ड बनाए रखो कि यह जीवन देश की सेवा एवं भगवान् की भक्ति के लिए है।
- देश में नेतृत्व हमेशा लगभग १% लोग करते हैं। ९% लोग उन १% लोगों की मुख्य शक्ति होते हैं तथा ८०% लोग इन १०% लोगों का अनुसरण करते हैं। तथा शेष १०% लोग अज्ञान, दुराग्रह, स्वार्थ व अहंकार के वशीभूत होकर सदा श्रेष्ठ एवं सात्विक लोगों का विरोध करते हैं।
- भारत स्वाभिमान के माध्यम से जो संकल्प हमने लिया है और जो स्वर्णिम भारत का सपना हमने देखा है, यही संकल्प और सपना था महर्षि दयानन्द, तात्याँ टोपे, नाना साहेब पेशवा, मंगल पाण्डेय, रानी लक्ष्मीबाई, तिलक, गोखले, महात्मा गाँधी, भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद व रामप्रसाद बिस्मिल आदि शहीदों अथवा क्रान्तिवीरों का। देश व देशवासियों से प्रेम करने वाला कोई भी व्यक्ति या संगठन इस आन्दोलन से जुड़े बिना नहीं रह सकता, हर सच्चे भारतीय के हृदय का संकल्प है– भारत स्वाभिमान। यदि माँ भारती के इन महान् सपूतों का यह सपना, संकल्प, विचार व आन्दोलन उचित था तो भारत स्वाभिमान का सामाजिक व आध्यात्मिक आन्दोलन भी उचित है। हम क्रान्तिवीरों व महापुरुषों के स्वप्नों व संकल्पों का भारत बनायेंगे। इसी उद्देश्य के लिये इस समय इस युग में भगवान् ने हमें जन्म दिया है।
- जिन पवित्र विचारों ने मुझे ऊँचा उठाया, मेरा आत्मविश्वास बढ़ाया व अग्निपथ पर आगे बढ़ाया, मैं आश्वस्त हूँ कि उन्हीं पवित्र विचारों से मेरे देश का प्रत्येक व्यक्ति जागेगा व देश का स्वाभिमान जगेगा।
- देश से मुझे धन, सत्ता, सम्पत्ति, सम्मान व जीवन मिला है। इस देश की माँ, बहन, बेटियों, बच्चों व इन्सानों की आँखों के आँसू मेरी पीड़ा है व देश की खुशहाली मेरी प्रसन्नता है।
- ऐ मेरे प्यारे भारतवासियो ! असम्भव को सम्भव करने की अपार क्षमता, सामर्थ्य व ऊर्जा तुम्हारे भीतर सन्निहित है। काल के भाल पर अपनी शक्ति, साहस व शौर्य से नया इतिहास लिखो। आजादी कुर्बानी, शहादत या आत्मबलिदान माँगती है।
- देश की हानि दुष्टों की दुष्टता से कम तथा सज्जन व्यक्तियों की उदासीनता से अधिक होती है। अतः अब मौन तोड़ो! स्वयं जागो! और देश को जगाओ!! और देश से आसुरी शक्तियों को परास्त करने के लिए आगे आओ।
- विकास का अर्थ यह नहीं कि एक समृद्ध व्यक्ति ने कितनी सारी अधिक से अधिक सम्पत्ति अर्जित कर ली है अपितु देश व दुनिया के अन्तिम आम आदमी को शिक्षा, चिकित्सा, सामाजिक न्याय व सम्मान हम कितना दे पा रहे हैं।
- मैं अकेला क्या कर सकता हूँ? इसके बजाय हमेशा यह सोचें कि मैं क्या नहीं कर सकता! दुनिया में कुछ भी असम्भव नहीं, सब कुछ सम्भव है।
- सत्य, सदाचार एवं मर्यादा के बन्धन में स्वयं को सदा बाँधे रखना, यह बन्धन सुख-शान्ति, समृद्धि एवं मुक्ति के लिए है। हमारा सामूहिक राष्ट्रीय जीवन वैभवपूर्ण तथा वैयक्तिक जीवन तप व संयमपूर्ण होना चाहिये, इससे समाज व राष्ट्र में समरसता, सुख-समृद्धि व शान्ति बढ़ेगी व देश की दरिद्रता दूर होगी। हम दरिद्रता को आध्यात्मिकता नहीं मानते।
- मैं समाज की भ्रष्ट व्यवस्थाओं से व्यथित होकर हार मानकर बैठने वाला व्यक्ति नहीं हूँ। मैं अन्तिम श्वास तक सत्य के लिए संघर्ष करके विजय पाने वाला योद्धा हूँ।
- भारत के स्वतन्त्रता के सम्पूर्ण संग्राम में ७ लाख २५ हजार ८५० क्रान्तिवीरों की शहादत हुई। ये सभी क्रान्तिवीर अंग्रेजों की जेलों में या तो सीधे फाँसी चढ़ाये गए या अंग्रेजी तोपों से बाँधकर उनके शरीर उड़ाए गए या फिर अंग्रेजी अत्याचारों को सहन न कर पाने के कारण तड़फ-तड़फ कर मर गए। भारत की आजादी, लगभग सवा ४ करोड़ (४ करोड़ २५ लाख) लोगों के अभिक्रम, परिश्रम, तपस्या व त्याग का परिणाम है।

❖ जिस देश का नेतृत्व पराक्रमी, स्वाभिमानी, विनयशील, संयमी, सदाचारी, पारदर्शी व दूरदर्शी नहीं होता वह राष्ट्र कभी भी सुरक्षित नहीं रह सकता।

❖ मेरे सम्पूर्ण अस्तित्व में मुझे अपना वतन दिखता है। मेरे वतन से मेरा तन है। मेरे हृदय, मन, मस्तिष्क, अस्थियाँ, मांसपेशियाँ व रक्त की एक-एक बूँन्द मैंने देश की मिट्टी से पायी है अत: जब तक देह में प्राण रहेगा तथा खून की आखिरी बूँन्द शेष रहेगी, मैं तब तक देश के लिए काम करूँगा। देश के लिए जिऊँगा तथा देश के सम्मान व स्वाभिमान के लिए मुझे अपने प्राणों की भी आहुति देनी पड़े तो भी पीछे नहीं हटूँगा।

❖ अपनी प्रसुप्त शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आत्मिक संगठनात्मक शक्ति का कभी भी मूल्यांकन कम करके नहीं आंकना, अपना उचित मूल्यांकन न करने के कारण ही हमारे भीतर बार-बार निराशा, अविश्वास व आत्मग्लानि का भाव पैदा हो जाता है।

❀ **मैं जीवन में कभी भी राजनैतिक पद ग्रहण नहीं करूँगा, यह मेरी दृढ़ प्रतिज्ञा है। राष्ट्रहित में देशभक्त, ईमानदार व कर्त्तव्यनिष्ठ लोगों को सत्ताओं के शीर्ष पर स्थापित करने के लिए अपने पवित्र राष्ट्रधर्म का निर्वहन कर रहा हूँ और करता रहूँगा।**

❀ **मेरे जीवन का एक मात्र ध्येय देवत्व की विजय व असुरत्व की पराजय है और इसके लिए मैं सम्पूर्ण जीवन संघर्ष करने व आत्मबलिदान के लिए तैयार हूँ।**

❀ स्वदेशी उत्पादों के प्रयोग में भी संस्थान द्वारा निर्मित उत्पादों को प्राथमिकता देना, क्योंकि संस्थान आपको न्यूनतम मूल्य में अच्छी से अच्छी दवा व (दैनिक जीवन में उपयोगी च्यवनप्राश, मंजन, टूथपेस्ट, साबुन व शैम्पू आदि) स्वस्थ उत्पाद उपलब्ध कराता है तथा उत्पादों के विक्रय से प्राप्त लाभांश का पूरा उपयोग गरीब व जनसामान्य की सेवा एवं राष्ट्र निर्माण के पवित्र उद्देश्य के लिए ही किया जाता है।

दान से जीवनदान व राष्ट्रोत्थान

❀ देशवासियों से प्राप्त सम्पूर्ण दान, धन व संसाधनों का उपयोग हमने पतंजलि योगपीठ ट्रस्ट व भारत स्वाभिमान आन्दोलन के माध्यम से पूर्ण पवित्रता व ईमानदारी के साथ देश एवं देशवासियों की भलाई के लिए किया है। यही आर्थिक व चारित्रिक शुचिता व ईमानदारी देश व दुनियाँ में हमारे संस्थान एवं संगठन की सबसे बड़ी ताकत है। संस्था व संगठन को प्राप्त दान व धन का कभी-भी व्यक्तिगत सुख व स्वार्थों के लिए प्रयोग नहीं किया है। यही हमारा लगभग दो दशकों का गौरवशाली, विश्वसनीय इतिहास है।

❀ हमने रोगियों को दवा उपलब्ध कराकर अपना स्वार्थ सिद्ध नहीं किया, अपितु रोगों से सन्तप्त करोड़ों लोगों की जिन्दगी बचाई है। संस्थान के समर्थकों, प्रशंसकों व समर्थ लोगों से दान लेकर हमने लाखों करोड़ों लोगों को जीवन दान दिया है तथा राष्ट्र का उत्थान किया है। सत्कर्मों में दान देना पुण्य व धर्म है तथा सेवा-कार्यों में दान न देना पाप व अधर्म है।

❀ जब पाप अन्याय, अधर्म, भ्रष्टाचार, अपराध, असुरक्षा व अव्यवस्था शिखर पर होती है, तभी किसी क्रान्ति का जन्म होता है, पाप का विकराल रूप ही उसका काल बन जाता है और वह क्रान्ति सफल होती है। भ्रष्टाचार व पाप का चरम-उत्कर्ष ही हमारे इस संघर्ष की सफलता का सूचक है।

❀ किसी भी व्यक्ति व धार्मिक, आध्यात्मिक व सामाजिक संस्था या संगठन की नीतियों सिद्धान्तों व मान्यताओं के बारे में व्यक्तिगत टिप्पणी करना हमारे संगठन की संस्कृति नहीं है।

❀ श्रीराम जैसी मर्यादा व चरित्र तथा श्रीकृष्ण जैसी नीति व कार्यकुशलता इस संगठन के आदर्श हैं।

❀ बाधाओं में रुकना नहीं, प्रलोभनों में झुकना नहीं, निन्दाओं से विचलित नहीं होना। बडी सोच, कड़ी मेहनत व पक्के इरादे के साथ 'चरैवेति चरैवेति' निरन्तर जीवन-पथ पर आगे बढते रहना, एक दिन सफलता अवश्य मिलेगी।

- मैं एक व्यक्ति नहीं, सम्पूर्ण राष्ट्र का प्रतिनिधि हूँ, मैं ऋषिपुत्र, आर्यपुत्र व भारतमाता का या ईश्वर का पुत्र हूँ। मेरे प्रत्येक अच्छे या बुरे प्रत्येक आचरण से देश, पूरा राष्ट्र प्रभावित होता है।
- मैं पहले भारतीय हूँ, बाद में हिन्दू, मुसलमान, सिख व ईसाई आदि हूँ। मनुष्य मेरी जाति, मानवता मेरा धर्म व राष्ट्रहित कर्म करना मेरे जीवन का लक्ष्य है।
- इस प्रपत्र में वर्णित विचारधारा, सिद्धान्त व मान्यताओं के अलावा हमारा न तो कोई दूसरा गुप्त एजेण्ड़ा है और न ही कोई साम्प्रदायिक अवधारणा है।

संगठन-उद्घोष

१– सत्ता बदली बार-बार, व्यवस्था बदलेंगे इस बार। २– स्वदेशी अपनायेंगे, स्वावलम्बी भारत बनायेंगे।
३– गो-हत्या बन्द करायेंगे, भारत समृद्ध बनायेंगे। ४– युवा शक्ति जगायेंगे, भारत का भविष्य बनायेंगे।
५– यदि न जगे हम इस बार, हानि होगी बेशुमार। ६– भ्रूण हत्या बन्द करायेंगे, नारी सम्मान बढ़ायेंगे।
७– गाँव-गाँव में जायेंगे, सबको योग सिखायेंगे। ८– जन-जन को योग सिखायेंगे, भारत को स्वस्थ बनायेंगे।
९– योग की अलख जगायेंगे, निर्व्यसनी भारत बनायेंगे। १०– सबका एक विचार समान, मेरा भारत बने महान्।
११– वन्देमातरम् – भारत माता की जय।
१२. संगठन में अभिवादन एवं अभिनन्दन में प्रयोज्य शब्द – ओ३म्, ॐ, १ॐ

–प्रकाशक–

भारत स्वाभिमान, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

फोन : ०१३३४-२४०००८, २४४१०७, २४६७३७ फैक्स : ०१३३४-२४४८०५, २४०६६४

E-mail : divyayoga@rediffmail.com

– हमारे संगठन–

१. युवा-संगठन, २. शिक्षक संगठन, ३. चिकित्सक-संगठन, ४. वित्तीय व्यवसायी संगठन ५. अधिवक्ता एवं पूर्व न्यायाधीशों का न्यायविद् संगठन, ६. पूर्व-सैनिक संगठन, ७. किसान संगठन, ८. उद्योग एवं वाणिज्य संगठन, ९. कर्मचारी संगठन, १०. अधिकारी संगठन, ११. श्रमिक संगठन, १२. विज्ञान एवं तकनीकी संगठन, १३. कला-संस्कृति संगठन, १४. मीडिया सगंठन, १५. वरिष्ठ नागरिक संगठन।

नोट – १– भारत स्वाभिमान आंदोलन के कार्यक्रमों, नीतियों, उद्देश्यों की तात्कालिक (करेण्ट) अधिक जानकारी के लिए प्रतिदिन प्रात: ५ से ८ व सायंकाल ८ से ९.३० **आस्था चैनल** पर **योग व आयुर्वेद कार्यक्रम** अवश्य देखें।

२– व्यवस्था परिवर्तन के इस राष्ट्र निर्माण के यज्ञ को आगे बढाने के लिये इस प्रपत्र को राष्ट्रभाषा व अन्य भारतीय भाषा में छपवाकर दानस्वरूप वितरित कर सकते हैं तथा वितरक के रूप में अपना या अपने संस्थान का नाम प्रकाशित कर सकते हैं।